

## سُورَةُ الْأَلْعَمَرَانَ

### سُورَةُ الْأَلْعَمَرَانَ

## سُورَةُ الْأَلْعَمَرَانَ - ٣

### سُورَةُ الْأَلْعَمَرَانَ - ٣

यह سूरह मदनी है, इस में 200 आयते हैं।

- इस सरह की आयत 33 में आले इमरान (इमरान की संतान) का वर्णन हुआ है जो ईसा (अलैहिस्सलाम) की माँ मर्यम (अलैहिस्सलाम) के पिता का नाम है। इस लिये इस का नाम ((आले इमरान)) रखा गया है।
- इस की आरंभिक आयत 9 तक तौहीद (अद्वैतवाद) को प्रस्तुत करते हुये यह बताया गया है कि कुर्�আনِ اللہُ عَزَّوَجَلَّ की वाणी है इस लिये सभी धार्मिक विवाद में यही निर्णयकारी है।
- आयत 10 से 32 तक अहले किताब तथा दूसरों को चेतावनी दी गई है कि यदि उन्होंने कुर्�আনِ اللہُ عَزَّوَجَلَّ के मार्गदर्शन को जिस का नाम इस्लाम है नहीं माना तो यह अल्लाह से कुफ़्र होगा जिस का दण्ड सदैव के लिये नरक होगा। और उन्होंने ने धर्म का जो वस्त्र धारण कर रखा है प्रलय के दिन उस की वास्तविकता खुल जायेगी और वह अपमानित हो कर रह जायेंगे।
- आयत 33 से 63 तक मर्यम (अलैहिस्सलाम) तथा ईसा (अलैहिस्सलाम) से संबन्धित तथ्यों को उजागरे किया गया जो उन निर्मल विचारों का खण्डन करते हैं जिन्हें ईसाईयों ने धर्म में मिला लिया है और इस संदर्भ में ज़करिया (अलैहिस्सलाम) तथा यह्या (अलैहिस्सलाम) का भी वर्णन हुआ है।
- आयत 64 से 101 तक अहले किताब ईसाईयों के कुपथ और उन के नैतिक तथा धार्मिक पतन का वर्णन करते हुये मुसलमानों को उन से बचने के निर्देश दिये गये हैं।
- आयत 102 से 120 तक मुसलमानों को इस्लाम पर स्थित रहने तथा कुर्�আনِ اللہُ عَزَّوَجَلَّ पाक को दृढ़ता से थामे रहने और अपने भीतर एक ऐसा गिरोह बनाने के निर्देश दिये गये हैं जो धार्मिक सुधार तथा सत्य का प्रचार करे और इसी के साथ अहले किताब के उपद्रव से सावधान रहने पर बल दिया गया है।
- आयत 121 से 189 तक उहुद के युद्ध की स्थितियों की समीक्षा की गई हैं तथा उन कमज़ोरियों की ओर संकेत किया गया है जो उस समय उजागर हुईं।
- आयत 190 से अन्त तक इस का वर्णन है कि ईमान कोई अन्ध विश्वास

نہीں، یہ سامझ بُوझ تथا س्वभाव کی آवाज़ है। और جब مनुष्य इसे دل से स्वीकार कर लेता है तो उस का संबन्धِ اल्लाह سे हो जाता और उस की यह प्रार्थना होती है कि उस का अन्त शुभ हो। उस समय उस का पालनहार उसे शुभपरिणाम की शुभसूचना सुनाता है कि उस ने सत्यर्म का पालन करने में जो योगदान दिये हैं वह उसे उन का भरपूर सुफल प्रदान करेगा। फिर अन्त में सत्य की राह में संघर्ष करने और सत्य तथा असत्य के संघर्ष में स्थित रहने के निर्देश दिये गये हैं।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مُغْفِرَةً لِذَنبِي وَعَافِيَةً لِعَوْنَاحِي  
وَجُنُونِي وَأَنْتَ أَعْلَمُ بِمَا فِي نَفْسِي فَاغْفِرْ مَا فِي نَفْسِي  
وَلَا يُؤْخِذْنِي أَنْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نَفْسِي

1. अलिफ़, लाम, मीम।
2. अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित नित्य स्थायी है।
3. उसी ने आप पर सत्य के साथ पुस्तक (कुर्�आन) उतारी है, जो इस से पहले की पुस्तकों के लिये प्रमाणकारी है, और उसी ने तौरात तथा इंजील उतारी है।
4. इस से पूर्व लोगों के मार्गदर्शन के लिये, और फुर्कान उतारा है<sup>[1]</sup>, तथा जिन्होंने अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया, उन्हीं के लिये कड़ी यातना है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, बदला लेने वाला है।
5. निस्सदेह अल्लाह से आकाशों तथा धरती की कोई चीज़ छुपी नहीं है।

<sup>[1]</sup> अर्थात् तौरात और इंजील अपने समय में लोगों के लिये मार्गदर्शन थी। परन्तु फुर्कान (कुर्�आन) उतरने के पश्चात् अब वह मार्गदर्शन केवल कुर्�आन पाक में है।

6. वही तुम्हारा रूप आकार गर्भाषयों में जैसे चाहता है, बनाता है, कोई पूज्य नहीं, परन्तु वही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।
7. उसी ने आप पर<sup>[1]</sup> यह पुस्तक (कुर्�आन) उतारी है जिस में कुछ आयतें मुहकम<sup>[2]</sup> (सुदृढ़) हैं जो पुस्तक का मूल आधार हैं, तथा कुछ दूसरी मुतशाबिह<sup>[3]</sup> (संदिग्ध) हैं। तो जिन के दिलों में कुटिलता है वह उपद्रव की खोज तथा मनमानी अर्थ करने के लिये संदिग्ध के पीछे पड़ जाते हैं। जब कि उन का वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। तथा जो ज्ञान में पक्के हैं वह कहते हैं कि सब हमारे पालनहार के पास से हैं, और बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।
8. (तथा कहते हैं): हे हमारे पालनहार!

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُ كُلَّ فِي الْأَرْضِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ  
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْعَظِيمُ ۝

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ أَيُّثُ  
مُنْكِمِثُ مِنْ أُمُّ الْكِتَابِ وَأَخْرَى مُتَشَبِّهُثُ تِبَاعًا  
الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ رَبَّنِيَّهُ فَيُعَذِّبُونَ مَا نَشَاءَ بِهِ  
مِنْهُ أَبْتِغَاهُ الْفِتْنَةُ وَابْتِغَاهُ تَنَوِّيلُهُ وَمَا  
يَعْلَمُهُ تَنَوِّيلُهُ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَالرَّسُولُونَ فِي الْعِلْمِ  
يَقُولُونَ امْنَاطِيهِ كُلُّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَدْرِي  
إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابُ ۝

رَبَّنَا لَا تُرِعْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْنَا وَهُبْ لَنَا مِنْ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि अल्लाह ने मानव का रूप आकार बनाने और उसकी आर्थिक आवश्यकता की व्यवस्था करने के समान, उस की आत्मिक आवश्यकता के लिये कुर्�आन उतारा है, जो अल्लाह की प्रकाशना तथा मार्गदर्शन और फुर्कान है। जिस के द्वारा सत्योसत्य में विवेक (अन्तर) कर के सत्य को स्वीकार करो।
- 2 मुहकम (सुदृढ़) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन के अर्थ स्थिर, खुले हुये हैं। जैसे एकेवरवाद, रिसालत तथा आदेशों और निषेधों एवं हलाल (वैध) और हराम (अवैध) से सम्बन्धित आयतें, यही पुस्तक का मूल आधार हैं।
- 3 मुतशाबिह (संदिग्ध) से अभिप्राय वह आयतें हैं जिन में उन तथ्यों की ओर संकेत किया गया है जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों में नहीं आ सकते, जैसे मौत के पश्चात् जीवन, तथा परलोक की बातें, इन आयतों के विषय में अल्लाह ने हमें जो जानकारी दी है हम उन पर विश्वास करते हैं, क्यों कि इनका विस्तार विवरण हमारी बुद्धि से बाहर है, परन्तु जिन के श दिलों में खोट है वह इन की वास्तविकता जानने के पीछे पड़ जाते हैं जो उन की शक्ति से बाहर है।

हमारे दिलों को हमें मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुटिल न कर, तथा हमें अपनी दया प्रदान कर। वास्तव में तू बहुत बड़ा दाता है।

9. हे हमारे पालनहार! तू उस दिन सब को एकत्र करने वाला है जिस में कोई सदिह नहीं, निसदिह अल्लाह अपने निर्धारित समय का विरुद्ध नहीं करता।
10. निश्चय जो काफिर हो गये उन के धन तथा उन की संतान अल्लाह (की यातना) से (बचाने में) उन के कुछ काम नहीं आयेगी, तथा वही अग्नि के इंधन बनेंगे।
11. जैसे फिरऔनियों तथा उन के पहले के लोगों की दशा हुई, उन्होंने हमारी निशानियों को मिथ्या कहा, तो अल्लाह ने उन के पापों के कारण उन को धर लिया। तथा अल्लाह कड़ा दण्ड देने वाला है।
12. हे नबी! काफिरों से कह दो कि तुम शीघ्र ही परास्त कर दिये जाओगे, तथा नरक की ओर एकत्रित किये जाओगे, और वह बहुत बुरा ठिकाना<sup>[1]</sup> है।
13. वास्तव में तुम्हारे लिये उन दो दलों में जो (बद्र में) सम्मुख हो गये, एक निशानी थी। एक अल्लाह की राह में युद्ध कर रहा था, तथा दूसरा काफिर था, वह अपनी आँखों से देख रहे थे कि यह (मुसलमान) तो दुगने लग

۰۷۱۴۷ وَحْمَةٌ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَكَابُ

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّارِبَبِ فِيَوْمٍ  
اللَّهُ أَكْبَرُ الْمُبِيْعَادُ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا نَلْقَى عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا  
أَفْلَادُهُمْ مِّنَ اللَّهِ شَيْءٌ وَّاُولَئِكَ هُمُ وَقُودٌ  
الثَّارِ

كَذَابُ الْفِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَبُوا  
بِالْيَتِيمَاتِ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ يَدُؤُبُهُمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ  
الْعِقَابُ

فُلْلَلَّدِينَ كَفَرُوا سَتُغْلِبُونَ وَتُخْسِرُونَ إِلَى  
جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَهَادُ

فَذَكَرَ كَلْمَانَ فِي فَقَيْئِينِ التَّقَوْنَانِ فَنَاهَى  
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَى كَافِرَةَ بَرِّ وَنَهْرٍ وَمُنْهَى هُمْ رَأْيَ  
الْعَيْنِ وَلَهُ يُؤْيِدُ بِمَصْرُهٍ مَّنْ يَشَاءُ إِنَّ فِي  
ذَلِكَ لَعْنَةً لِّلْأُولَى الْأَبْصَارِ

<sup>1</sup> इस में काफिरों की मुसलमानों के हाथों पराजय की भविष्यवाणी है।

रहे हैं। तथा अल्लाह अपनी सहायता द्वारा जिसे चाहे समर्थन देता है। निःसंदेह इस में समझ बूझ वालों के लिये बड़ी शिक्षा<sup>[1]</sup> है।

14. लोगों के लिये उन के मन को मोहने वाली चीज़ें, जैसे स्त्रियाँ, संतान, सोने चाँदी के ढेर, निशान लगे घोड़े, पशुओं तथा खेती, शोभनीय बना दी गई है। यह सब सांसारिक जीवन के उपभोग्य हैं। और उत्तम आवास अल्लाह के पास हैं।
15. (हे नबी!) कह दो: क्या मैं तुम्हें इस से उत्तम चीज़ बता दूँ? उन के लिये जो डरें। उन के पालनहार के पास ऐसे स्वर्ग हैं। जिन में नहरें बह रही हैं। वह उन में सदावासी होंगे। और निर्मल पत्नियाँ होंगी, तथा अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होंगी। और अल्लाह अपने भक्तों को देख रहा है।
16. जो (यह) प्रार्थना करते हैं कि हमारे पालनहार! हम ईमान लाये, अतः हमारे पापों को क्षमा कर दे, और हमें नरक की यातना से बचा।
17. जो सहनशील हैं, सत्यवादी हैं, आज्ञाकारी हैं, दानशील तथा भोरों में अल्लाह से क्षमा याचना करने वाले हैं।
18. अल्लाह साक्षी है जो न्याय के साथ कायम है, कि उस के सिवा कोई

رُّتِنَ لِلَّذَائِسْ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ  
وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقْنَطِرَةِ مِنَ الدَّهَبِ  
وَالْفُضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمَسْوِيَةِ وَالْأَغْامَ وَالْحُرْثَ  
ذَلِكَ مَتَاعٌ أَعْيُونَهُ الْجُنُبُونَ وَاللهُ عِزَّ ذَهَبَ حُسْنُ  
الْبَارِ<sup>②</sup>

قُلْ أَوْنِسِكُمْ عَنِيهِنْ ذَلِكُمُ الَّذِينَ اتَّقَوا عِنْدَ  
رَبِّهِمْ جَنِثُ بَجْرُونِ مِنْ تَعْبِهَا الْأَنْهُرُ خَلِدِينَ فِيهَا  
وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ وَاللهُ  
بِصِّيرٍ إِلَيْهِمْ عِبَادٌ<sup>③</sup>

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّا أَمْسَكَنَا فَاغْفِرْنَا  
ذُنُوبَنَا وَقَنَاعَدَابَ النَّارِ<sup>④</sup>

الظَّاهِرِينَ وَالظَّاهِرِقِينَ وَالظَّاهِرَتِينَ  
وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْاسْحَارِ<sup>⑤</sup>

شَهَدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلِكُ كُلُّهُ وَأُولُو

1 अर्थात् इस बात की कि विजय अल्लाह के समर्थन से प्राप्त होती है, सेना की संख्या से नहीं।

पूज्य नहीं है, इसी प्रकार फरिश्ते और ज्ञानी लोग भी (साक्षी हैं) कि उस के सिवा कोई पूज्य नहीं। वह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

19. निस्सदेह (वास्तविक) धर्म अल्लाह के पास इस्लाम ही है, और अहले किताब ने जो विभेद किया तो अपने पास ज्ञान आने के पश्चात् आपस में द्वेष के कारण किया। तथा जो अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़ (अस्वीकार) करेगा, तो निश्चय अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।
20. फिर यदि वह आप से विवाद करें तो कह दें कि मैं स्वयं तथा जिस ने मेरा अनुसरण किया अल्लाह के अज्ञाकारी हो गये। तथा अहले किताब, और उम्मियों (अर्थात् जिन के पास किताब नहीं आई) से कहो कि क्या तुम भी आज्ञाकारी हो गये? यदि वह आज्ञाकारी हो गये तो मार्गदर्शन पा गये। और यदि विमुख हो गये तो आप का दायित्व (संदेश) पहुँचा<sup>[1]</sup> देना है। तथा अल्लाह भक्तों को देख रहा है।
21. जो लोग अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़ करते हों, तथा नवियों को अवैध बध करते हों, तथा उन लोगों का बध करते हों जो न्याय का आदेश देते हें तो उन्हें दुखदायी यातना<sup>[2]</sup> की शुभ सूचना सुना दो।

1 अर्थात् उन से बाद विवाद करना व्यर्थ है।

2 इस में यहूद की आस्थिक तथा कर्मिक कुपथा की ओर संकेत है।

الْعِلَمُ قَاتِلًا يَا لِقْسِطٍ مَا لِلَّهِ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ  
الْعَكِيرُ<sup>⑤</sup>

إِنَّ الَّذِينَ عَاهَدُوا اللَّهَ إِلَيْهِ اسْلَامًا وَمَا اخْتَلَفَ  
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مَنْ يَعْدِمَ مَا جَاءَهُمْ  
الْعِلْمُ بَعْدَ ابْتِينَهُمْ وَمَنْ يَكْفُرُ بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَنَّ  
اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ<sup>⑥</sup>

فَإِنْ حَاجُوكُمْ فَقْلُ أَسْلَمُتُ وَجْهِيَ بِلِلَّهِ وَمِنْ  
أَكْبَعِنَ مَوْلُنَ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ  
وَالْأُمَّةِنَ أَسْلَمَتُهُمْ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقِدْ  
أَهْتَدَ وَإِنْ تَوَلُوا فَإِنَّمَا عَلَيْكُمُ الْبَلَمُ وَاللَّهُ  
بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ<sup>⑦</sup>

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ  
الثَّمِينَ بِغَيْرِ حِقْقٍ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ  
يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطٍ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرُهُمْ  
بِعَدَّا بِالْأَلْيُونَ<sup>⑧</sup>

22. यही हैं जिन के कर्म संसार तथा परलोक में अकारथ गये, और उन का कोई सहायक नहीं होगा।
23. हे नबी! क्या आप ने उन की<sup>[1]</sup> दशा नहीं देखी जिन को पुस्तक का कुछ भाग दिया गया? वह अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाये जा रहे हैं, ताकि उन के बीच निर्णय<sup>[2]</sup> करे तो उन का एक गिरोह मुँह फेर रहा है और वह ही ही मुँह फेरने वाले।
24. उन की यह दशा इस लिये है कि उन्होंने कहा कि नरक की अग्नि हमें गिनती के कुछ दिन ही छूएगी, तथा उन को अपने धर्म में उन की मिथ्या बनाई हुई बातों ने धोखे में डाल रखा है।
25. तो उन की क्या दशा होगी, जब हम उन को उस दिन एकत्र करेंगे, जिस (के आने) में कोई सदेह नहीं, तथा प्रत्येक प्राणी को उस के किये का भरपुर प्रतिफल दिया जायेगा, और किसी के साथ कोई अत्याचार नहीं किया जायेगा।?
26. हे (नबी)! कहो: हे अल्लाह! राज्य के<sup>[3]</sup> अधिपति (स्वामी)! तू जिसे चाहे राज्य

أُولَئِكَ الَّذِينَ حَيَطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي  
الْدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُ مِنْ نِصْرٍ ④

أَلَّا يَرَى الَّذِينَ أَنْوَا نَصْبَهُمْ مِنَ الْكَثِيرِ  
يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمْ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَوْمَ  
قُرْبَىٰ مِنْهُمْ وَهُمْ مُغْرِضُونَ ④

ذَلِكَ يَأْنَهُمْ قَالُوا إِنَّا تَمْسَكْنَا النَّارَ إِلَّا إِنَّا  
مَعْلُوذُهُمْ وَرَهْبَهُمْ فِي دِيْنِهِمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ④

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ وَوُقِيتُ  
كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَبَدَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ④

قُلْ اللَّهُمَّ بِلِكَ الْمُلْكُ تُؤْتِ الْمُلْكَ مَنْ شَاءَ

1 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान हैं।

2 अर्थात् विभेद का निर्णय कर दो। इस आयत में अल्लाह की पुस्तक से अभिप्रायः तौरात और इंजील हैं। और अर्थ यह है कि जब उन्हें उन की पुस्तकों की ओर बुलाया जाता है कि अपनी पुस्तकों ही को निर्णयक मान लो, तथा बताओ कि उन में अंतिम नबी पर ईमान लाने का आदेश दिया गया है या नहीं? तो वह कतरा जाते हैं, जैसे कि उन्हें कोई ज्ञान ही न हो।

3 अल्लाह की अपार शक्ति का वर्णन।

दे, और जिस से चाहे राज्य छीन ले, तथा जिसे चाहे सम्मान दे, और जिसे चाहे अपमान दे। तेरे ही हाथ में भलाई है। निःसंदेह तू जो चाहे कर सकता है।

27. तु रात को दिन में प्रविष्ट कर देता है, तथा दिन को रात में प्रविष्ट कर<sup>[1]</sup> देता है। और जीव को निर्जीव से निकालता है। तथा निर्जीव को जीव से निकालता है, और जिसे चाहे अगणित आजीविका प्रदान करता है।
28. मुमिनों को चाहिये कि वह ईमान वालों के विरुद्ध काफ़िरों को अपना सहायकमित्र न बनायें। और जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह से कोई संबंध नहीं। परन्तु उन से बचने के लिये<sup>[2]</sup> और अल्लाह तुम्हें स्वयं अपने से डरा रहा है। और अल्लाह ही की ओर जाना है।
29. हे नबी! कह दो कि जो तुम्हारे मन में है उसे मन ही में रखो या व्यक्त करो अल्लाह उसे जानता है। तथा जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह सब को जानता है। और अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
30. जिस दिन प्रत्येक प्राणी ने जो सुकर्म किया है, उसे उपस्थित पायेगा, तथा जिस ने कुकर्म किया है वह कामना करेगा कि उस के तथा उस के कुकर्मों के बीच बड़ी दूरी होती।

1 इस में रात्रि-दिवस के परिवर्तन की ओर संकेत है।

2 अर्थात् संधि मित्र बना सकते हो।

وَتَنْزَعُ الْمُلْكُ مِنْ شَاءَ وَتُعَزِّزُ مِنْ شَاءَ وَتُذَلِّلُ  
مِنْ شَاءَ وَيُبَرِّكُ الْحَمْدُ لِإِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ<sup>۷</sup>

تُولِّهِ أَئِيلَىٰ فِي التَّهَارِ وَتُولِّهِ التَّهَارِ فِي أَئِيلَىٰ  
وَتُخْرِجُ الْحَقَّ مِنَ الْمَيْتِ وَتُخْرِجُ الْمَيْتَ مِنَ الْحَقِّ  
وَتَرْزُقُ مَنْ شَاءَ بِغَيْرِ حِسَابٍ<sup>۸</sup>

لَا يَتَبَخِّرُ الْمُؤْمِنُونَ الْكُفَّارُ مُنَازِعُهُمْ مِنْ  
دُوْنِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَمْ يَمْسِ  
مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَعْوَمُ مِنْهُمْ نُفَرَّةٌ  
وَيُحِيدُ رُكُمَ اللَّهُ نَفْسَهُ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ<sup>۹</sup>

فَلْمَنْ تُخْفَوْمَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ بَدْنُوكُمْ  
يَعْلَمُهُ اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي  
الْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ<sup>۱۰</sup>

يَوْمَ تَهْدِي كُلُّ نَفْسٍ مَا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُخْضِرَةً فَتَنَا  
عَلَّمَتْ مِنْ سُوءٍ تَنْوِيْلَةً لَوْاْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمْدَأْ  
بَعِيدًاً وَبَعِيدًاً لَحُرُّ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَءُوفٌ  
بِالْعِبَادِ<sup>۱۱</sup>

तथा अल्लाह तुम्हें स्वयं से डराता<sup>[1]</sup>  
है। और अल्लाह अपने भक्तों के लिये  
अति करुणामय है।

31. हे नबी! कह दो: यदि तुम अल्लाह  
से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण  
करो, अल्लाह तुम से प्रेम<sup>[2]</sup> करेगा।  
तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा। और  
अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
32. हे नबी! कह दो: अल्लाह और रसूल  
की आज्ञा का अनुपालन करो। फिर  
भी यदि वह विमुख हों तो निस्सदेह  
अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।
33. वस्तुतः अल्लाह ने आदम, नूह,  
इब्राहीम की संतान तथा इमरान की  
संतान को संसार वासियों में चुन  
लिया था।
34. यह एक दूसरे की संतान है, और  
अल्लाह सब सुनता और जानता है।
35. जब इमरान की पत्नी<sup>[3]</sup> ने कहा: हे  
मेरे पालनहार! जो मेरे गर्भ में है,  
मैं ने तेरे<sup>[4]</sup> लिये उसे मुक्त करने की  
मनौती मान ली है। तू इसे मुझ से  
स्वीकार कर लो। वास्तव में तू ही सब  
कुछ सुनता और जानता है।

1 अर्थात् अपनी अवैज्ञा से।

2 इस में यह संकेत है कि जो अल्लाह से प्रेम का दावा करता हो, और मुहम्मद  
(سَلَّلَ اللّٰهُ عَلٰيْهِ وَسَلَّمَ) व सल्लم) का अनुसरण न करता हो तो वह अल्लाह का  
प्रेमी नहीं हो सकता।

3 अर्थात् मर्यम की माँ।

4 अर्थात् बैतुल मक़दिस की सेवा के लिये।

قُلْ إِنَّمَا يُحِبُّ مُجْنَّبُو اللَّهِ فَأَيُّهُمُ الْمُّكْفُرُونَ يُحِبُّنَّ اللَّهَ وَيَغْفِرُ  
لَهُ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ<sup>①</sup>

قُلْ أَطْبِعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَإِنْ تَوْلُوا فَإِنَّ اللَّهَ  
لَا يُحِبُّ الْكُفَّارِ<sup>②</sup>

إِنَّ اللَّهَ أَصْطَطَ لَآدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ  
وَآلَ عَمْرَانَ عَلَى الْعَلَيِّينَ<sup>③</sup>

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلَيْهِ<sup>④</sup>

إِذْ قَالَتِ امْرَأُ عَمْرَانَ رَبِّيْ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا  
فِي بَطْنِيْ فَخَرَّأَتْ قَبَّلَ مِنْيَ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ  
الْعَلِيمُ<sup>⑤</sup>

36. फिर जब उस ने बालिका जनी तो (संताप से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे तो बालिका हो गई, हालाँकि जो उस ने जना उस का अल्लाह को भली भाँति ज्ञान था-और नर, नारी के समान नहीं होता-, और मैं ने उस का नाम मर्यम रखा है। और मैं उसे तथा उस की संतान को धिक्कारे हुये शैतान से तेरी शरण में देती हूँ॥<sup>[1]</sup>

37. तो तेरे पालनहार ने उसे भली भाँति स्वीकार कर लिया। तथा उस का अच्छा प्रतिपालन किया। और ज़करिया को उस का संरक्षक बनाया। ज़करिया जब भी उस के मेहराब (उपासना कोष्ठ) में जाता तो उस के पास कुछ खाद्य पदार्थ पाता वह कहता कि हे मर्यम! यह कहाँ से (आया) है? वह कहती: यह अल्लाह के पास से (आया) है। वास्तव में अल्लाह जिसे चाहता है अगणित जीविका प्रदान करता है।

38. तब ज़करिया ने अपने पालनहार से प्रार्थना की है मेरे पालनहार! मुझे अपनी ओर से सदाचारी संतान प्रदान करा निस्सदेह तू प्रार्थना सुनने वाला है।

39. तो फ़रिश्तों ने उसे पुकारा- जब वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था- कि: अल्लाह तुझे "यह्या" की शुभ:

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّي وَصَعَدَهَا أُنْثِيٌّ وَاللهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الدُّكْرُ بِالْأُنْثِيٍّ وَإِنَّ سَيِّدَنَّاهُمْ يَحْرُمُ وَإِنَّ أُعْيُدُ هَا يَكَ وَذَرْتَنَّاهُ مَوْنَ الشَّيْطَنَ الرَّجِيلِ<sup>④</sup>

فَقَبَّهَا رَبُّهَا يَقْبُولُ حَسْنَ وَأَنْتَهَا بَاتِّاً حَسْنًا وَكَفَّهَا زَكْرِيَاً كَمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكْرِيَا الْبُحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْنَ فَاقَالَ يَمْرِحُونَ لِكَهْدَنَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ<sup>⑤</sup>

هُنَالِكَ دَعَاءٌ كَرِيمٌ قَالَ رَبِّي هَبْرِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيٌّ طَيِّبٌ إِنَّكَ سَيِّدُ الدُّعَاءِ<sup>⑥</sup>

فَنَادَتُهُ الْمَلِكَةُ وَهُوَ قَابِعٌ يَصْلِي فِي الْبُحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يَبْشِرُكَ بِيَحْيٍ مُصْدِقًا لِكَلْمَةٍ مِنْ اللَّهِ

1 हदीस में है कि जब कोई शिशु जन्म लेता है, तो शैतान उसे स्पर्श करता है जिस के कारण वह चीख़ कर रोता है, परन्तु मर्यम और उस के पुत्र को स्पर्श नहीं किया है। (सही बुखारी भ 4548)

सूचना दे रहा है, जो अल्लाह के शब्द (ईसा) का पुष्टि करने वाला, प्रमुख तथा संयमी और सदाचारियों में से एक नबी होगा।

40. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे कोई पुत्र कहाँ से होगा, जब कि मैं बढ़ा हो गया हूँ और मेरी पत्नी बाँझी<sup>[1]</sup> है? उस ने कहा: अल्लाह इसी प्रकार जो चाहता है कर देता है।
41. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मेरे लिये कोई लक्षण बना दो। उस ने कहा: तेरा लक्षण यह होगा कि तीन दिन तक लोगों से बात नहीं कर सकेगा। परन्तु संकेत से। तथा अपने पालनहार का बहुत स्मरण करता रहा और संध्या, प्रातः उस की पवित्रता का वर्णन करा।
42. और (याद करो) जब फरिश्तों ने मर्यम से कहा: हे मर्यम! तुझे अल्लाह ने चुन लिया, तथा पवित्रता प्रदान की, और संसार की स्त्रियों पर तुझे चुन लिया।
43. हे मर्यम! अपने पालनहार की अज्ञाकारी रहो। और सज्दा करो तथा रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करती रहो।
44. यह गैब (परोक्ष) की सूचनायें हैं। जिन्हें हम आप की ओर प्रकाशना कर रहे हैं और आप उन के पास उपस्थित न थे जब वह अपनी

وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الظَّالِمِينَ ⑩

قَالَ رَبِّيْتَ أَنِّيْ يَكُونُ لِيْ غَلَمَّانُ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ  
وَأَمْرَقَ عَاقِرًا قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَفْعُلُ  
مَا يَشَاءُ ⑪

قَالَ رَبِّيْتَ اجْعَلْنِيْ إِلَيْهِ قَالَ إِنَّكَ أَلَا تَعْلَمُ  
النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامًا لِلأَرْمَأْنَادُ ذُكْرَ زَبَكَ كَثِيرًا  
وَسَيِّدُهُ بِالْعُشْنِيِّ وَالْأَبَكَارِ ⑫

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلِئَكَةُ يَعْرِيْمُ ابْنَ اللَّهِ  
أَصْطَفَكِ وَطَهَرَكِ وَاصْطَفَكِ عَلَى نِسَاءِ  
الْعَلَمِيِّنَ ⑬

يَعْرِيْمُ اقْتُنِيِّ لِرَبِّكِ وَاسْجُدْنِي وَارْكُنْ مَعَ  
الرَّاكِعِيِّنَ ⑭

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْعَيْبِ تُوجِيهُ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ  
لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقَوْنَ أَقْلَامَهُمْ إِذْ هُمْ يَكْلُمُونَ مَرِيمَ  
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَحْصُمُونَ ⑮

<sup>1</sup> यह प्रश्न ज़करिया ने प्रसन्न हो कर आश्चर्य से किया।

लेखनियाँ<sup>[1]</sup> फेंक रहे थे कि कौन मर्यम का अभिरक्षण करेगा। और न उन के पास उपस्थित थे जब वह झगड़ रहे थे।

45. जब फरिश्तों ने कहा: हे मर्यम! अल्लाह तुझे अपने एक शब्द<sup>[2]</sup> की शुभ सूचना दे रहा है। जिस का नाम मसीह ईसा पुत्र मर्यम होगा। वह लोक-परलोक में प्रमुख, तथा (मेरे) समीपवर्तियों में होगा।
46. वह लोगों से गोद में तथा अधेड़ आयु में बातें करेगा, और सदाचारियों में होगा।
47. मर्यम ने (आश्वर्य से) कहा: मेरे पालनहार! मुझे पुत्र कहाँ से होगा, मुझे तो किसी पुरुष ने हाथ भी नहीं लगाया है? उस ने<sup>[3]</sup> कहा: इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है उत्पन्न कर देता है। जब वह किसी काम के करने का निर्णय कर लेता है तो उस के लिये कहता है कि: "हो जा" तो वह हो जाता है।
48. और अल्लाह उस को पुस्तक तथा प्रबोध और तौरात तथा इंजील की शिक्षा देगा।
49. और फिर वह बनी इसाईल का एक रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पालनहार

1 अर्थात् यह निर्णय करने के लिये कि: मर्यम का संरक्षक कौन हो?

2 अर्थात् वह अल्लाह के शब्द "कुन" से पैदा होगा। जिस का अर्थ है "हो जा।"

3 अर्थात् फरिश्ते ने।

إذْ قَالَتِ الْمَلِكَةُ يَعْرِمْ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْضِ  
إِنَّهُ أَعْلَمُ بِعِنْدِهِ ابْنُ مَرْيَمَ وَجِئْنَا فِي  
الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقْرَبِينَ

وَيَكْلِمُ النَّاسَ فِي الْمُهَدِّدِ وَكَهْلَاؤِنَ الظَّلِيجِينَ

قَالَتْ رَبِّي أُنِّي يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَحْيَتِي بَشَرٌ  
قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ إِذَا قَضَى أَمْرًا  
فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ⑩

وَيَعْلَمُهُ الْكِتَابُ وَالْحِكْمَةُ وَالْوُرْثَةُ وَالْأَنْجِيلُ

وَرَسُولُ اللَّهِ بْنُ إِسْرَائِيلُ هُوَ الَّذِي قَدِّحَتْكُمْ بِأَيْمَانِ

की ओर से निशानी लाया हूँ। मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से पक्षी के आकार के समान बनाऊँगा, फिर उस में फूँक दूँगा तो वह अल्लाह की अनुमति से पक्षी बन जायेगा। और अल्लाह की अनुमति से जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को स्वस्थ कर दूँगा। और मुर्दां को जीवित कर दूँगा। तथा जो कुछ तुम खाते तथा अपने घरों में संचित करते हो उसे तुम्हें बता दूँगा। निस्सदेह इस में तुम्हारे लिये बड़ी निशानियाँ हैं, यदि तुम ईमान वाले हो।

50. तथा मैं उस की सिद्धि करने वाला हूँ जो मुझ से पहले की है "तौरात"। तुम्हारे लिये कुछ चीज़ों को हलाल (वैध) करने वाला हूँ, जो तुम पर हराम (अवैध) की गयी हैं। तथा मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की निशानी ले कर आया हूँ। अतः तुम अल्लाह से डरो, और मेरे अज्ञाकारी हो जाओ।

51. वास्तव में अल्लाह मेरा और तुम सब का पालनहार है, अतः उसी की इबादत (वंदना) करो। यही सीधी डगर है।

52. तथा जब ईसा ने उन से कुफ़्र का संवेदन किया तो कहा: अल्लाह के धर्म की सहायता में कौन मेरा साथ देगा? तो हवारियों (सहचरों) ने कहा: हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाये, तुम इस के साक्षी रहो कि हम मुस्लिम (अज्ञाकारी) हैं।

مَنْ رَبِّكُهُوا لَنْ أَخْلُقُ لَكُمْ مِنَ الظَّلَمِنَ كَهْيَنَةٍ  
الظَّلَمُرِ فَأَنْفَخْرِ فِيهِ فَيَكُونُ كَبِيرًا إِذْنَ اللَّهِ وَأَبْرِئُ  
الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأَنْجِي الْمُوْتَقِي بِإِذْنِ اللَّهِ وَ  
أَبْسِكُمْ بِمَا تَأْكُونُ وَمَا تَعْلَمُونَ فِي يَوْمِ الْحِجَارَةِ  
فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِلَّهِ إِنَّهُمْ مُؤْمِنُينَ ﴿٦﴾

وَمُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيِّ مِنَ الْوُرْبَةِ وَلِأَحْلَانَ  
لَكُمْ بَعْضُ الَّذِي حُرِمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْنَكُمْ بِإِيمَانٍ  
مَنْ رَبِّكُمْ فَأَنْتُمُ الَّهُ وَأَطْبِعُونِ ﴿٧﴾

إِنَّ اللَّهَ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ قَاعِدُوْهُ هَذَا صَرَاطٌ  
مُسْتَقِيْمٌ ﴿٨﴾

فَلَمَّا أَحَسَّ عَيْنِي مِنْهُمُ الْكُفَّارَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي  
إِنَّ اللَّهَ قَالَ الْحَوَارِثُوْنَ حَمْدُ أَنْصَارِ اللَّهِ  
أَمْكَأْ بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِأَنَّ مُسْلِمُوْنَ ﴿٩﴾

53. हे हमारे पालनहार! जो कुछ तू ने उतारा है, हम उस पर ईमान लाये, तथा तेरे रसूल का अनुसरण किया, अतः हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले।

54. तथा उन्होंने षड्यंत्र<sup>[1]</sup> रचा, और हम ने भी षड्यंत्र रचा। तथा अल्लाह षड्यंत्र रचने वालों में सब से अच्छा है।

55. जब अल्लाह ने कहा: हे ईसा! मैं तुझे पूर्णतः लेने वाला तथा अपनी ओर उठाने वाला हूँ। तथा तुझे काफिरों से पवित्र (मुक्त) करने वाला हूँ। तथा तेरे अनुयायियों को प्रलय के दिन तक काफिरों के ऊपर<sup>[2]</sup> करने वाला हूँ। फिर तुम्हारा लौटना मेरी ही ओर है। तो मैं तुम्हारे बीच उस विषय में निर्णय कर दूँगा जिस में तुम विभेद कर रहे हो।

56. फिर जो काफिर हो गये, उन्हें लोक परलोक में कड़ी यातना दूँगा, तथा उन का कोई सहायक न होगा।

57. तथा जो ईमान लाये, और सदाचार किये तो उन्हें उन का भरपूर प्रतिफल दूँगा। तथा अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

58. हे नबी! यह हमारी आयतें और

رَبَّنَا أَمْكَنَّا إِلَيْهَا أَنْزَلْنَا وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَأَكْتَبْنَا  
مَعَ الْمُهْدِينَ ②

وَمَكْرُونَ وَمَكْرُوا لِلَّهِ مُؤْمِنُونَ ③

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيُعِيسَى إِنِّي مُؤْمِنٌ بِرَبِّي وَرَأْفَعُكَ إِلَى  
وَمُظْهِرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاجْعَلُ الدِّينَ  
أَتَبْعُولَكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ  
ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَكَ فَأَحْكَمَ بَيْنَكَمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ  
خَتِيفُونَ ④

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُغْنِيْهُمْ عَدَابًا شَدِيدًا  
فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نُصُرَّفُنَ ⑤

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفَّىْهُمْ  
أَجُورُهُمْ وَاللَّهُ لَأَحْبَبُ الطَّالِبِينَ ⑥

ذَلِكَ نَتْلُوُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالَّذِي كُرِّبَكُمْ ⑦

1 अर्थात् ईसा (अलैहिस्सलाम) को हत् करने का। तो अल्लाह ने उन्हें विफल कर दिया। (देखिये: सूरह निसा, आयत 157)।

2 अर्थात् यहूदियों तथा मुशिरकों के ऊपर।

तत्वज्ञयता की शिक्षा है जो हम तुम्हें सुना रहे हैं।

59. वस्तुतः अल्लाह के पास ईसा की मिसाल ऐसी ही है, [1] जैसे आदम की। उसे (अर्थात् आदम को) मिट्टी से उत्पन्न किया, फिर उस से कहा: "हो जा" तो वह हो गया।
60. यह आप के पालनहार की ओर से सत्य<sup>[2]</sup> है, अतः आप संदेह करने वालों में न हों।
61. फिर आप के पास ज्ञान आ जाने के पश्चात् कोई आप से ईसा के विषय में विवाद करे, तो कहो कि आओ हम अपने पुत्रों तथा तुम्हारे पुत्रों, और अपनी स्त्रियों तथा तुम्हारी स्त्रियों को बुलाते हैं, और स्वयं को भी, फिर अल्लाह से सविनय प्रार्थना करें, कि अल्लाह की धिक्कार मिथ्यावादियों पर<sup>[3]</sup> हो।
62. वास्तव में यही सत्य वर्णन है, तथा अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं। निश्चय अल्लाह ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

إِنَّ مَثَلَ عِنْدِيٍّ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلُ اُدَمَ خَلْقَهُ مِنْ  
جُرَابٍ شَوَّقَ إِلَيْهِ لَكُنْ فَيَكُونُ ①

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا كُنْ مِنَ الْمُمْدُرِينَ ②

فَمَنْ حَاجَكَ فِيهِ مِنْ يَعْدِمَكَ أَكَمَّ مِنَ الْعُلُومِ قَلْ  
عَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا  
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفَسَنَا وَأَنْفَسَكُمْ شَرَبْتُمْ  
فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ③

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصْصُ الْحَقُّ وَمَا مِنْ إِلَهٌ إِلَّا  
اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ④

1 अर्थात् जैसे प्रथम पुरुष आदम (अलैहिस्सलाम) को बिना माता-पिता के उत्पन्न किया, उसी प्रकार ईसा (अलैहिस्सलाम) को बिना पिता के उत्पन्न कर दिया, अतः वह भी मानव पुरुष हैं।

2 अर्थात् ईसा अलैहिस्सलाम का मानव पुरुष होना। अतः आप उन के विषय में किसी संदेह में न पड़ें।

3 अल्लाह से यह प्रार्थना करें कि वह हम में से मिथ्यावादियों को अपनी दया से दूर कर दे।

63. फिर भी यदि वह मुँह<sup>[1]</sup> फेरें, तो निस्सदेह अल्लाह उपद्रवियों को भली भाँति जानता है।
64. हे नबी! कहो कि हे अहले किताब! एक ऐसी बात की ओर आ जाओ जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य है। कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत (बंदना) न करें, और किसी को उस का साझी न बनायें, तथा हम में से कोई एक दूसरे को अल्लाह के सिवा पालनहार न बनाये। फिर यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि तुम साक्षी रहो कि हम (अल्लाह के)<sup>[2]</sup> अज्ञाकारी हैं।
65. हे अहले किताब! तुम इब्राहीम के बारे में विवाद<sup>[3]</sup> क्यों करते हो, जब कि तौरात तथा इंजील इब्राहीम के पश्चात् उतारी गई है? क्या तुम समझ नहीं रखते?
66. और फिर तुम्हीं ने उस विषय में विवाद किया जिस का तुम को कुछ ज्ञान<sup>[4]</sup> था, तो उस विषय में क्यों विवाद कर रहे हो जिस का तुम्हें

فَإِنْ تَوَلُّوا فَإِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِ بِالْمُقْبِلِينَ ۝

فُلُّ يَا أَهْلَ الْكُفَّارِ تَعَالَوْا إِلَى كُلِّ مُوْسَأٍ  
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَا تَعْبُدُ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نُشْرِكُ بِهِ  
شَيْئاً وَلَا يَتَعَجَّلَ بَعْضُنَا بَعْضُنَا أَرْبَابًا مَّنْ دُونَ  
اللَّهِ ۖ فَإِنْ تَوَلُّوا فَقُولُوا شَهَدُوا إِلَى مُسْلِمِينَ ۝

يَا أَهْلَ الْكُفَّارِ لَمْ يَحْلِمُوكُمْ فِي زَرْبَهِمْ وَمَا  
أَنْزَلَتِ الْوَزْرَةُ وَالْأَعْجَمُونُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ  
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

هَلَّا نَذَرْتُكُمْ لَذَّةً حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ  
بِهِ عِلْمٌ فَلَمَّا تَعَاجَلُوكُمْ فِيمَا لَكُمْ لَكُمْ  
بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنَّمَا لَأَنْتُمْ مُؤْمِنُونَ ۝

1 अर्थात् सत्य को जानने की इस विधि को स्वीकार न करें।

2 इस आयत में ईसा अलैहिस्सलाम से संबंधित विवाद के निवारण के लिये एक दूसरी विधि बताई गई है।

3 अर्थात् यह क्यों कहते हो कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम हमारे धर्म पर थे। तौरात और इंजील तो उन के सहस्रों वर्ष के पश्चात् अवतरित हुईं। तो वह इन धर्मों पर कैसे हो सकते हैं।

4 अर्थात् अपने धर्म के विषय में।

कोई ज्ञान<sup>[1]</sup> नहीं? तथा अल्लाह  
जानता है, और तुम नहीं जानते।

67. इब्राहीम न यहूदी था, न नसरानी  
(इसाई)। परन्तु वह एकेष्वरवादी,  
मुस्लिम "आज्ञाकारी" था। तथा वह  
मिश्रणवादियों में से नहीं था।

68. वास्तव में इब्राहीम से सब से अधिक  
समीप तो वह लोग हैं जिन्होंने उस  
का अनुसरण किया, तथा यह नबी<sup>[2]</sup>,  
और जो ईमान लाये। और अल्लाह  
ईमान वालों का संरक्षक भमित्र है।

69. अहले किताब में से एक गिरोह की  
कामना है कि तुम्हें कुपथ कर दे।  
जब कि वह स्वयं को कुपथ कर रहा  
है, परन्तु वह समझते नहीं हैं।

70. हे अहले किताब! तुम अल्लाह की  
आयतों<sup>[3]</sup> के साथ कुफ्र क्यों कर रहे  
हो, जब कि: तुम साक्षी<sup>[4]</sup> हो? के  
विषय में।

71. हे अहले किताब! क्यों सत्य को  
असत्य के साथ मिलाकर संदिग्ध कर  
देते हो, और सत्य को छुपाते हो,  
जब कि तुम जानते हो।

72. अहले किताब के एक समुदाय ने  
कहा: कि दिन के आरंभ में उस पर  
ईमान ले आओ जो ईमान वालों पर

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلَا نَصَارَائِيًّا وَلَكِنْ  
كَانَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنْ  
الْمُشْرِكِينَ ④

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِيمَانٍ لَّلَّذِينَ  
أَتَبَعُواهُ وَهُدَى الَّذِينَ وَالَّذِينَ أَمْنَوْا  
وَاللَّهُ وَلِلَّهِ الْمُؤْمِنُونَ ⑤

وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ  
يُضْلُّوْنَ حَلْمًا، وَمَا يُضْلُّونَ إِلَّا أَنفُسُهُمْ  
وَمَا يَشْعُرُونَ ⑥

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَمَّا تَكَفَرُوْنَ بِاِبْرَاهِيمَ  
وَأَنْتُمْ شَهَادُوْنَ ⑦

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَمَّا تَلِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ  
وَتَنْتَهُوْنَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ⑧

وَقَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أَمْوَالَهُ الَّذِي أَنْزَلْتُ  
عَلَى الَّذِينَ أَمْنَوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاللَّيْلَ وَالْآخِرَةَ

1 अर्थात् इब्राहीम अलैहिस्सलाम के धर्म के बारे में।

2 अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के अनुयायी।

3 जो तुम्हारी किताब में अंतिम नबी से संबंधित हैं।

4 अर्थात् उन अयतों के सत्य होने के साक्षी हो।

उतारा गया है, और उस के अन्त (अर्थात्: संध्या समय) कुफ्र कर दो, संभवतः वह फिर<sup>[1]</sup> जायें।

73. और केवल उसी की मानो जो तुम्हारे (धर्म) का अनुसरण करे। (हे नबी!) कह दो कि मार्गदर्शन तो वही है जो अल्लाह का मार्गदर्शन है। (और यह भी न मानो कि) जो (धर्म) तुम को दिया गया है वैसा किसी और को दिया जायेगा, अथवा वह तुम से तुम्हारे पालनहार के पास विवाद कर सकेंगे। आप कह दें कि प्रदान अल्लाह के हाथ में है, वह जिसे चाहे देता है। और अल्लाह विशाल ज्ञानी है।
74. वह जिसे चाहे अपनी दया के साथ विशेष कर देता है, तथा अल्लाह बड़ा दानशील है।
75. तथा अहले किताब में वह भी है जिस के पास चाँदी-सोने का ढेर धरोहर रख दो तो उसे तुम्हें चुका देगा। तथा उन में वह भी है कि: जिस के पास एक दीनार<sup>[2]</sup> भी धरोहर रख दो, तो वह तुम्हें नहीं चुकायेगा, परन्तु जब सदा उस के सिर पर सवार रहो। यह (बात) इस लिये है कि उन्होंने कहा कि उम्मियों के बारे में हम पर कोई

۱۰۷ ﴿عَلَّهُمْ يَرْجُونَ﴾

۱۰۸ ﴿وَلَا تُؤْمِنُوا لِلَّاهِ مَنْ كَيْفَةً دُبِّنَكُهُ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَنَّ يُؤْتِيَ أَحَدًا مِثْلَ مَا أَفْيَيْتُمْ وَإِنَّمَا يَأْخُذُكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ النَّفْلَىٰ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلَيْهِ﴾

۱۰۹ ﴿يَخْصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمُ﴾

۱۱۰ ﴿وَمَنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِنْ تَأْمِنْهُ بِقِنْطَارٍ يُؤْدِهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِنْ تَأْمِنْهُ بِدِينَارٍ كَلِيلٍ إِلَيْكَ إِلَامَادْمَتْ عَلَيْهِ قَلْبَهُ مَا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَاتُلُوا إِلَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمَمِ سَبِيلٌ وَمَنْ يَقُولُنَّ عَلَىَ اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ بِعَلْمٍ﴾

1 अर्थात् मुसलमान इस्लाम से फिर जायें।

2 दीनार- सोने के सिक्के को कहा जाता है।

दोष<sup>[1]</sup> नहीं। तथा अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

76. क्यों नहीं, जिस ने अपना वचन पूरा किया और (अल्लाह से) डरा तो वास्तव में अल्लाह डरने वालों से प्रेम करता है।

77. निस्सदेह जो अल्लाह के<sup>[2]</sup> वचन तथा अपनी शपथों के बदले तनिक मूल्य ख़रीदते हैं, उन्हीं का अखिरत (परलोक) में कोई भाग नहीं। न प्रलय के दिन अल्लाह उन से बात करेगा, और न उन की ओर देखेगा, और न उन्हें पवित्र करेगा। तथा उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

78. और बैशक उन में से एक गिरोह<sup>[3]</sup> ऐसा है जो अपनी जुबानों को किताब पढ़ते समय मरोड़ते हैं ताकि तुम उसे पुस्तक में से समझो जब कि वह पुस्तक में से नहीं है। और कहते हैं कि वह अल्लाह के पास से है जब कि वह अल्लाह के पास से नहीं है। और अल्लाह पर जानते हुये झूठ बोलते हैं।

79. किसी पुरुष जिस के लिये अल्लाह ने पुस्तक, निर्णयशक्ति और नुबुव्वत दी हैं उस के लिये योग्य नहीं कि लोगों

كُلُّ مَنْ أَوْقَى بِعَهْدِهِ وَأَنْقَلَ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ  
الْمُتَقِنِينَ<sup>①</sup>

إِنَّ الَّذِينَ يَشْرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا  
قَبِيلًاً أُولَئِكَ لِأَخْلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا  
يُكَلِّمُهُمْ اللَّهُ وَلَا يُنَظِّرُ النَّاسَ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ وَلَا  
يُرِيكُمُوهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ<sup>②</sup>

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَأْتُونَ أَسْنَانَهُمْ بِالْكَذِبِ  
لِتَخْسِسُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ  
وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ  
اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ<sup>③</sup>

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيهِ اللَّهُ الْكِتَابَ  
وَالْحُكْمُ وَالثِّبَةُ لَهُ يَقُولُ لِلْمُجْرِمِينَ لَكُنُوكُ عَبَادًا

1 अर्थात् उन के धन का अपभोग करने पर कोई पाप नहीं। क्यों कि: यहूदियों ने अपने अतिरिक्त सब का धन हलाल समझ रखा था। और दूसरों को वह "उम्मी" कहा करते थे। अर्थात् वह लोग जिन के पास कोई आसमानी किताब नहीं है।

2 अल्लाह के वचन से अभिप्राय वह वचन है, जो उन से धर्म पुस्तकों द्वारा लिया गया है।

3 इस से अभिप्राय यहूदी विद्वान हैं। और पुस्तक से अभिप्राय तौरात है।

से कहे कि اُल्लाह को छोड़ कर मेरे दास बन जाओ।<sup>[1]</sup> अपितु (वह तो यही कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले बन जाओ। इस कारण कि तुम पुस्तक की शिक्षा देते हो। तथा इस कारण कि उस का अध्ययन स्वयं भी करते रहते हो।

80. तथा वह तुम्हें कभी आदेश नहीं देगा कि फ़रिश्तों तथा नबियों को अपना पालनहार<sup>[2]</sup> (पूज्य) बना लो, क्या तुम को कुफ्र करने का आदेश देगा, जब कि तुम अल्लाह के अज्ञाकारी हो?

81. तथा (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया कि जब भी मैं तुम्हें कोई पुस्तक और प्रबोध (तत्वदर्शिता) दूँ, फिर तुम्हारे पास कोई रसूल उसे प्रमाणित करते हूये आये, जो तुम्हारे पास है, तो तुम अवश्य उस पर ईमान लाना। और उस का समर्थन करना। (अल्लाह) ने कहा: क्या तुम ने स्वीकार किया, तथा इस पर मेरे वचन का भार उठाया? तो सब ने कहा: हम ने स्वीकार कर लिया। अल्लाह ने कहा तुम साक्षी रहो। और मैं भी तुम्हारे<sup>[3]</sup> साथ साक्षियों में हूँ।

لَيْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكُنْ كُوْنُوا رَبِّيْنَ بِهِ مَا كُنْتُمْ  
تُعْلَمُوْنَ الْكِتَابَ وَإِنْ كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۝

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَسْجُدُوا إِلَيَّكُمْ  
وَاللَّهُمَّ أَرْبَابُّا مَا يَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ  
أَنْتُمْ مُسْلِمُوْنَ ۝

وَإِذَا أَخَذَ اللَّهُ مِنْ قَبْلِ النَّبِيِّنَ لِمَا أَتَيْتُكُمْ  
مِنْ كِتْبٍ وَحِكْمَةٍ تُقْرَأُ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ  
لِمَا أَعْلَمُ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَنَتُنْصُرُنَّهُ قَالَ  
عَاقِرُّهُمْ وَأَخْدُمُهُمْ عَلَى ذَلِكُمْ أَصْرِيْ مَقْلُوْلُ أَقْرَرُنَّا  
قَالَ فَاسْهُمُدُوا وَأَنَا مَعْلُومٌ مِنَ الشَّهِيدِيْنَ ۝

1 भावार्थ यह है कि जब नबी के लिये योग्य नहीं कि: लोगों से कहे कि मेरी इबादत करो तो किसी अन्य के लिये कैसे योग्य हो सकता है?

2 जैसे अपने पालनहार के आगे झुकते हो, उसी प्रकार उन के आगे भी झुको।

3 भावार्थ यह है कि: जब आगामी नबियों को ईमान लाना आवश्यक है, तो उन के अनुयायियों को भी ईमान लाना आवश्यक होगा। अतः अंतिम नबी मुहम्मद (सल्लल्लहु अलैहि, व सल्लम) पर ईमान लाना सभी के लिये अनिवार्य है।

82. फिर जिस ने इस के<sup>[1]</sup> पश्चात् मुँह फेर लिया, तो वही अज्ञाकारी है।
83. तो क्या वह अल्लाह के धर्म (इस्लाम) के सिवा (कोई दूसरा धर्म) खोज रहे हैं? जब कि जो आकाशों तथा धरती में हैं, स्वेच्छा तथा अनिच्छा उसी के आज्ञाकारी<sup>[2]</sup> हैं, तथा सब उसी की ओर फेरे<sup>[3]</sup> जायेंगे।
84. (हे नबी!) आप कहें कि हम अल्लाह पर तथा जो हम पर उतारा गया, और जो इब्राहीम और इस्माईल तथा इस्हाक और याकूब एवं (उन की) संतानों पर उतारा गया, तथा जो मूसा, ईसा, तथा अन्य नवियों को उन के पालनहार की ओर से प्रदान किया गया है (उन पर) ईमान लाये। हम उन (नवियों) में किसी के बीच कोई अंतर नहीं<sup>[4]</sup> करते और हम उसी (अल्लाह) के आज्ञाकारी हैं।
85. और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

فَمَنْ تَوَلَّ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ①

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ فِي  
الشَّمَاءِ وَالْأَرْضِ كُلُّهَا إِذَا أَرَى إِلَيْهِ  
يُرْجَعُونَ ②

كُلُّ أَمْلَاكِ اللَّهِ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَمَا أَنْزَلَ عَلَى  
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ  
وَالْأَسْبَاطَ وَمَا أَنْزَلَ مُوسَى وَعِيسَى وَالنَّبِيُّونَ مِنْ  
رَّبِّهِمْ كَلَّا لَنْ يَرَوْنَ بَيْنَ أَحَدِنَا هُمْ وَمَنْ  
مُسْلِمُونَ ③

وَمَنْ يَنْجُمُ غَيْرُ الْأَسْلَمِ دِينًا فَلَمَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَمَنْ  
فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَيْرِينَ ④

1 अर्थात् इस वचन और प्रण के पश्चात्।

2 अर्थात् उसी की आज्ञा तथा व्यवस्था के अधीन हैं। फिर तुम्हें इस स्वभाविक धर्म से इन्कार क्यों है?

3 अर्थात् प्रलय के दिन अपने कर्मों के प्रतिफल के लिये।

4 अर्थात् मूल धर्म अल्लाह की आज्ञाकारिता है, और अल्लाह की पुस्तकों तथा उस के नवियों के बीच अंतर करना, किसी को मानना और किसी को न मानना अल्लाह पर ईमान और उस की आज्ञाकारिता के विपरीत है।

86. اہلہاہ ایسیٰ جاتی کو کہے مار्गदर्शن  
دے گا جو اپنے ایمان کے پشچاٹ  
کافیر ہو گئے، اور ساکھی رہے کہ  
یہ رسول صلی اللہ علیہ وسلم وآلہٖ علیہٖ السلام  
پاس خولے تک آ گئے؟! اور اہلہاہ  
اتھاچاریوں کو مار्गدارشنا نہیں دتتا।
87. انہیں کا پ्रتیکار (بدلہ) یہ ہے کہ  
عنہم ایمان پر اہلہاہ تکہ فریشتوں اور  
سب لوگوں کی دیکھار ہو گی।
88. وہ عنہم ایمان میں سداواسی ہونگے، عنہم سے  
یا تنا کم نہیں کی جائے گی، اور نہ  
عنہم ایمان کا شکار دیا جائے گا।
89. پرانٹو جینہوں نے اس کے پشچاٹ تائب:  
(کھما یا چنان) کر لی، تکہ سुधار  
کر لیا، تو نیشکر اہلہاہ اتی  
کھماشیل دیاواں ہیں۔
90. واقعہ میں جو اپنے ایمان لانے کے  
پشچاٹ کافیر ہو گئے، فیر کوکھ  
میں بढ़تے گئے تو عنہم کی تائب:  
(کھما یا چنان) کدھپی<sup>[1]</sup> سُکیکار نہیں کی  
جائے گی، تکہ وہی کوکھ ہے۔
91. نیشکر جو کافیر ہو گئے، تکہ  
کافیر رہتے ہوئے مار گئے تو عنہم  
سے دھرتی بھر سونا بھی سُکیکار نہیں  
کیا جائے گا، یعنی اس کے د्वारा  
ار्थدणڈ دے اے عنہم کے لیے دُخندادی  
یا تنا ہے اور عنہم کا کوئی  
سہایک نہ ہو گا।

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا لَّهُرَّا وَابْعَدُهُمْ أَنَّهُمْ  
وَسَيْهُدُوا إِنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَّجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ  
وَأَنَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّلِيمِينَ ⑤

أُولَئِكَ جَزَاؤهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلِكَةِ  
وَالنَّايسِ أَجْمَعِينَ ⑥

خَلِيلِينَ فِيهَا لَا يُغَفَّفُ عَنْهُمُ العَذَابُ وَلَا هُمْ  
يُنْظَرُونَ ⑦

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا  
فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑧

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَابْعَدُهُمْ ثُخَازِدَادُوا  
كُفَّارًا إِنْ تَقْبِلَ تُؤْتَهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ⑨

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَا تُؤْتُوا وَهُمْ لَفَارِقُهُنَّ  
يُقْبَلُ مِنْ أَحَدِهِمْ مَلِلُ الْأَرْضِ ذَهَبَ  
وَلَوْ افْتَدَ بِهِ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ  
أَلِيمٌ وَمَا لَهُمْ مِنْ نُصْرَىٰ ⑩

1 ار्थاً یہ یہ کہ مौت کے سमय کھما یا چنان کروں۔

92. तुम पुण्य<sup>[1]</sup> नहीं पा सकोगे, जब तक उस में से दान न करो जिस से मोह रखते हो, तथा तुम जो भी दान करोगे, वास्तव में अल्लाह उसे भली भाँति जानता है।
93. प्रत्येक खाद्य पदार्थ बनी इसराईल के लिये हलाल (वैध) थे, परन्तु जिसे इसराईल<sup>[2]</sup> ने अपने ऊपर हराम (अवैध) कर लिया, इस से पहले कि तौरात उतारी जाये। (हे नवी!) कहो कि तौरात लाओ तथा उसे पढ़ो, यदि तुम सत्यवादी हो।
94. फिर इस के पश्चात् जो अल्लाह पर मिथ्या आरोप लगायें, तो वही वास्तव में अत्याचारी हैं।
95. उन से कह दो, अल्लाह सच्चा है, अतः तुम एकेश्वरवादी इब्राहीम के धर्म पर चलो, तथा वह मिश्रणवादियों में से नहीं था।
96. निस्सदेह पहला घर जो मानव के

1 अर्थात् पुण्य का फल स्वर्ग।

2 जब कुर्�आन ने यह कहा कि यहूद पर बहुत से स्वच्छ खाद्य पदार्थ उन के अत्याचार के कारण अवैध कर दिये गये। (देखिये सूरह निसा आयत 160, सूरह अन्नाम आयत 146)। अन्यथा यह सभी इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग में वैध थे। तो यहूद ने इसे झुठलाया तथा कहने लगे कि यह सब तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम के युग ही से अवैध चले आ रहे हैं। इसी पर यह आयतें श उतरी। कि तौरात से इस का प्रमाण प्रस्तुत करो कि यह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के युग ही से अवैध है। यह और बात है कि इसराईल ने कुछ चीजों जैसे ऊँट का मांस रोग अथवा मनौती के कारण अपने लिये स्वयं अवैध कर लिया था। यहाँ यह याद रखें कि इस्लाम में किसी उचित चीज़ को अनुचित करने की अनुमति किसी को नहीं है। (देखिये: शौकानी।)

لَئِنْ تَنَالُوا الْبَرَحَثِيْ تُنْفِقُو اِمْتَانًا بِعَبُونَهُ  
وَمَا يُنْفِقُو اِمْتَانًا شَيْئٌ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ<sup>①</sup>

كُلُّ الظَّعَامَ كَانَ حِلًّا لِّيْنَى إِسْرَاءِيلَ إِلَّا مَا  
حَزَمَ إِسْرَاءِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُرَدَّ  
الْتَّوْرَةُ قُلْ فَاتَّوْ بِالْتَّوْرَةِ فَأَثْلُوهَا إِنَّ  
كُلُّ ثُمَّ صَدِيقِينَ<sup>②</sup>

فَمَنْ أَفْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذَبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ  
فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ<sup>③</sup>

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ فَإِنَّهُ عَوْابِلَةُ إِرْهِيمَ حَنِيفًا وَمَا  
كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ<sup>④</sup>

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لِلَّذِيْ بَيْكَهُ مُبَرِّكًا

लिये (अल्लाह की वन्दना का केन्द्र) बनाया गया, वह वही है जो मक्का में है, जो शुभ तथा संसार वासियों के लिये मार्गदर्शन है।

وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ ⑤

97. उस में खुली निशानियाँ हैं (जिन में) मक़ामें<sup>[1]</sup> इब्राहीम है, तथा जो कोई उस (की सीमा) में प्रवेश कर गया तो वह शांत (सुरक्षित) हो गया। तथा अल्लाह के लिये लोगों पर इस घर का हज्ज अनिवार्य है, जो उस तक राह पा सकता हो। तथा जो कुफ़्र करेगा, तो अल्लाह संसार वासियों से निस्यूह है।

فِيهِ إِيَّاتٌ بَيْتٌ مَقَامٌ لِإِبْرَاهِيمَ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ أَمِنًا وَلَمْ يَأْتِ الظَّارِفُ حِجْرُ الْبَيْتِ مِنْ اسْتِكَاعٍ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ تَغَرَّ فِيَّ قَاتَ اللَّهُ عَزَّزَهُ عَنِ الْعَالَمِينَ ⑤

98. (हे नबी!) आप कह दें कि हे अहले किताब! यह क्या है कि तुम अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र कर रहे हो, जब कि अल्लाह तुम्हारे कर्मों का साक्षी है!

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَمْ تَكُفُّوْنَ بِاِيَّتِ اللَّهِ وَاللهُ شَهِيدٌ عَلَى مَا تَعْمَلُوْنَ ⑤

99. हे अहले किताब! किस लिये लोगों को जो ईमान लाना चाहें, अल्लाह की राह से रोक रहे हो, उसे उलझाना चाहते हो जब कि तुम साक्षी<sup>[2]</sup> हो, और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से असूचित नहीं है?

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَمْ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ أَمَّنَ تَبَعُّوْهَا عَوْجًا وَأَنْتُمْ شَهِيدُوْمَا وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ⑤

100. हे ईमान वालो! यदि तुम अहले किताब के किसी गिरोह की बात मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान के पश्चात् फिर तुम्हें काफिर बना देंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تُطِيعُوا فِرِيقًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّونَكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُلَّ كُفَّارٍ ⑤

101. तथा तुम कुफ़्र कैसे करोगे जब कि

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَأَنْتُمْ تُتَلَّ عَلَيْكُمْ إِيَّا اللَّهِ

1 अर्थात् वह पत्थर जिस पर खड़े हो कर इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने काबा का निर्माण किया जिस पर उन के पैरों के निशान आज तक हैं।

2 अर्थात् इस्लाम के सत्धर्म होने को जानते हो।

तुम्हारे सामने अल्लाह की आयतें पढ़ी जा रही हैं, और तुम में उस के रसूल<sup>[1]</sup> मौजूद हैं? और जिस ने अल्लाह को<sup>[2]</sup> थाम लिया तो उसे सुपथ दिखा दिया गया।

102. हे ईमान वालो! अल्लाह से ऐसे डरो जो वास्तव में उस से डरना हो, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुये ही आनी चाहिये।

103. तथा अल्लाह की रसी<sup>[3]</sup> को सब मिल कर दृढ़ता से पकड़ लो, और विभेद में न पड़ो। तथा अपने ऊपर अल्लाह के पुरस्कार को याद करो जब तुम एक दूसरे के शत्रु थे, तो तुम्हारे दिलों को जोड़ दिया, और तुम उस के पुरस्कार के कारण भाई भाई हो गये। तथा तुम अग्नि के गड़हे के किनारे पर थे, तो तुम्हें उस से निकाल दिया, इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों को उजागर करता है, ताकि तुम मार्गदर्शन पा जाओ।

104. तथा तुम में एक समुदाय ऐसा अवश्य होना चाहिये जो भली बातों<sup>[4]</sup> की ओर बुलाये, तथा भलाई का आदेश देता रहे, और

وَفِيهِمْ رَسُولُهُ وَمَنْ يَعْصِمُ بِاِلَّا هُنَّ فَقَدْ هُدُوا إِلَى  
صِرَاطِ مُسْتَقِيمٍ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ حَقٌّ تُقْرِبُوهُ  
وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمُ مُسْلِمُونَ ۝

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جِئِيْعًا وَلَا تَرْفَعُوا وَآذُنُوا  
نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْنَاكُمْ إِذْ نَنْهَا أَعْدَادَ قَاتِلَيْنَا  
ثُلُوكُمْ فَاصْحَحُمُ بِنِعْمَتِهِ إِخْرَاجُنَا وَكُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ  
حُرْجٍ وَمِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَنَا كُلُّ مِنْهَا لَكُمْ إِنَّكُمْ بُشَّارٌ  
إِنَّمَا لَكُمُ الْأَيْمَنَةَ لَعَلَّكُمْ تَهَدُونَ ۝

وَلَنَّكُنَّ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَا مُرْسَلَوْنَ  
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأُولَئِكَ هُمُ  
الْمُفْلِحُونَ ۝

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

2 अर्थात् अल्लाह का आज्ञाकारी हो गया।

3 अल्लाह की रसी से अभिप्राय कुर्�आन और नबी (सल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सुन्नत है। यही दोनों मुसलमानों की एकता और परस्पर प्रेम का सूत्र है।

4 अर्थात् धर्मानुसार बातों का।

बुराई<sup>[1]</sup> से रोकता रहे, और वही सफल होंगे।

105. तथा उन<sup>[2]</sup> के समान न हो जाओ, जो खुली निशानियाँ आने के पश्चात् विभेद तथा आपसी विरोध में पड़ गये, और उन्हीं के लिये घोर यातना है।
106. जिस दिन बहुत से मुख उजले, तथा बहुत से मुख काले होंगे। फिर जिन के मुख काले होंगे (उन से कहा जायेगा): क्या तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ्र कर लिया था? तो अपने कुफ्र करने का दण्ड चखो।
107. तथा जिन के मुख उजले होंगे वह अल्लाह की दया (स्वर्ग) में रहेंगे। वह उस में सदावासी होंगे।
108. यह अल्लाह की आयतें हैं, जो हम आप को हक्क के साथ सुना रहे हैं, तथा अल्लाह संसार वासियों पर अत्याचार नहीं करना चाहता।
109. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों में और जो धरती में है। तथा अल्लाह ही की ओर सब विषय फेरे जायेंगे।
110. तुम सब से अच्छी उम्मत हो, जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो, तथा बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान (विश्वास)

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَتَّلُوا وَأَخْتَلُوا مِنْ بَعْدِ مَاتَ أَهْلُهُمُ الْبَيْتُ وَلَا يُكَفِّرُونَ لَمَّا كَانَ عَظِيمًا

يُومَ تَبَيَّضُ وُجُوهٌ وَسُودٌ وُجُوهٌ فِي أَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَتْ وُجُوهُهُمْ أَفَرُّهُمْ بَعْدَ إِيمَانِهِمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنُّوا يَكْفُرُونَ

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضُتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَلِيلُونَ

تَلِكَ أَيُّهُ اللَّهُ أَنْتُلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ بِإِلَيْهِمْ خَلِيلُوْنَ

وَيَلْهُوْمَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ شُرْجَمُ الْأَمْوَارُ

كُنُّمُ خَيْرَ أَمَّةٍ أُخْرَجَتْ لِلنَّاسِ ثَمَرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَوْا مَنْ أَهْلُ الْكِتَابَ لَكُمْ خَيْرٌ أَهُمْ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَاللَّهُمْ الْفَيْسُونَ

1 अर्थात् धर्म विरोधी बातों से।

2 अर्थात् अहले किताब (यहूदी व ईसाई)।

रखते<sup>[۱]</sup> हो। और यदि अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिये अच्छा होता। उन में कुछ ईमान वाले हैं, और अधिकतर अवैज्ञाकारी हैं।

111. वह तुम को सताने के सिवा कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। और यदि तुम से युद्ध करोगे तो वह तुम को पीठ दिखा देंगे। फिर सहायता नहीं दिये जायेंगे।
112. इन (यहूदियों) पर जहाँ भी रहें, अपमान थोप दिया गया, (यह और बात है कि) अल्लाह की शरण<sup>[۲]</sup> अथवा लोगों की शरण में हो<sup>[۳]</sup>, यह अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी हो गये, तथा उन पर दरिद्रता थोप दी गयी। यह इस कारण हुआ कि वह अल्लाह की आयतों के साथ कुफ्र कर रहे थे और नबियों का अवैध बध कर रहे थे। यह इस कारण कि उन्होंने अवैज्ञा की, और (धर्म की) सीमा का उल्लंघन कर रहे थे।
113. वह सभी समान नहीं हैं, अहले

لَنْ يَضْرُبُوكُمُ الْأَذْيَى وَإِنْ يُقْتَلُوكُمْ يُؤْكَلُمُ  
الْأَدْبَارُ تُكُلُّ لِلْيَصْرُونَ ⑩

ضَرِبَتْ عَلَيْهِمُ الدَّلَةُ أَيْنَ مَا تُقْتَلُوا إِلَّا بَعْدِ  
مِنَ اللُّوَّ وَحْمَلُ مِنَ النَّاسِ وَبَاءُوا بِغَضَبِنَّ  
اللَّهِ وَضَرِبَتْ عَلَيْهِمُ السَّكَنَةُ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ  
كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبيَاءَ  
بِغَيْرِ حَقٍّ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا  
يَعْتَدُونَ ۝

لَيْسُوا سَوَاءً مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أَمْ هُمْ قَاتِلُهُمْ

1 इस आयत में मुसलमानों को संबोधित किया गया है, तथा उन्हें उम्मत कहा गया है। किसी जाति अथवा वर्ग और वर्ण के नाम से संबोधित नहीं किया गया है। और इस में यह संकेत है कि मुसलमान उन का नाम है जो सत्धर्म के अनुयायी हों। तथा उन के अस्तित्व का लक्ष्य यह बताया गया है कि वह सम्पूर्ण मानव विश्व को सत्धर्म इस्लाम की ओर बुलायें जो सर्व मानव जाति का धर्म है। किसी विशेष जाति और क्षेत्र अथवा देश का धर्म नहीं है।

2 दूसरा बचाव का तरीका यह है कि किसी गैर मुस्लिम शक्ति की उन्हें सहायता प्राप्त हो जाये।

3 अल्लाह की शरण से अभिप्राय इस्लाम धर्म है।

کیتاب مें एक (सत्य पर) स्थित  
उम्मत<sup>[1]</sup> भी है, जो अल्लाह की  
आयतें रातों में पढ़ते हैं, तथा सज्दा  
करते रहते हैं।

114. अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर  
ईमान रखते हैं, तथा भलाई का  
अदेश देते, और बुराई से रोकते हैं,  
तथा भलाईयों में अग्रसर रहते हैं,  
और यही सदाचारियों में हैं।
115. वह जो भी भलाई करेंगे, उस की  
उपेक्षा(अनादर) नहीं किया जायेगा  
और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली  
भाँति जानता है।
116. (परन्तु) जो काफिर<sup>[2]</sup> हो गये, उन  
के धन और उन की संतान अल्लाह  
(की यातना) से उन्हें तनिक भी  
बचा नहीं सकेगी, तथा वही नारकी  
है, वही उस में सदावासी होंगे।
117. जो दान वह इस संसारिक जीवन  
में करते हैं वह उस वायु के  
समान है जिस में पाला हो, जो  
किसी कौम की खेती को लग जाये  
जिन्हों ने अपने ऊपर अत्याचार<sup>[3]</sup>  
किया हो, और उस का नाश  
कर देतथा अल्लाह ने उन पर  
अत्याचार नहीं किया परन्तु वह

يَتَشَاءُونَ إِنَّ اللَّهَ أَنَّمَا أَئِيلُ وَهُمْ  
يَسْجُدُونَ ④

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ  
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَا يَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَنَهَا يَغْرُونَ  
فِي الْخَيْرِ ۝ وَأُولَئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ حَيْثُ فَلَنْ يُكَفِّرُوهُ ۝  
وَإِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِ بِالْمُتَقْبِلِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا  
أَوْلَادُهُمْ مِنْ أَنَّ اللَّهَ يُحِبُّ أَهْلَكَ الظَّالِمَاتِ  
هُنْ فِيهَا خَلِدُونَ ۝

مَثِيلُ مَا يَنْفَعُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَيْلٌ  
رِّيحٌ فِيهَا صَرَاصَابٌ حَرْثٌ قَوْمٌ طَلَمُوا  
أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكُتُهُ ۝ وَمَا ظَلَمُهُمُ اللَّهُ وَلِكُنْ  
أَنْفُسَهُمْ بَطَلَمُونَ ۝

1 अर्थात् जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर ईमान लाये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ियल्लाहु अन्ह) आदि।

2 अर्थात् अल्लाह की अयतों (कुर्�आन) को नकार दिया।

3 अबैज्ञा तथा अस्वीकार करते रहे थे। इस में यह संकेत है कि अल्लाह पर ईमान के बिना दानों का प्रतिफल परलोक में नहीं मिलेगा।

स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे।

118. हे ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को अपना भेदी न बनाओ,<sup>[1]</sup> वह तुम्हारा बिगाड़ने में तनिक भी नहीं चकेंगे, उन को वही बात भाती है जिस से तुम्हें दुःख हो। उन के मुखों से शत्रुता खुल चुकी है, तथा जो उन के दिल छुपा रहे हैं वह इस से बढ़कर है, हम ने तुम्हारे लिये आयतों का वर्णन कर दिया है, यदि तुम समझो।

119. सावधान! तुम ही वह हो कि उन से प्रेम करते हो, तथा वह तुम से प्रेम नहीं करते। और तुम सभी पुस्तकों पर ईमान रखते हो, तथा वह जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये। और जब अकेले होते हैं तो क्रोध से तुम पर उँगलियों की पोरे चबाते हैं। कह दो कि अपने क्रोध से मर जाओ, निस्संदेह अल्लाह सीनों की बातें जानता है।

120. यदि तुम्हारा कुछ भला हो तो उन्हें बुरा लगता है और यदि तुम्हारा कुछ बुरा हो जाये तो उस से प्रसन्न हो जाते हैं। तथा यदि तुम सहन करते रहे, और आज्ञाकारी रहे, तो उन का छल तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। उन के सभी कर्म अल्लाह के घेरे में हैं।

1 अर्थात् वह गैर मुस्लिम जिन पर तुम को विश्वास नहीं की वह तुम्हारे लिये किसी प्रकार की अच्छी भावना रखते हों।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَنْجُوذُو بِإِيمَانَهُ مِنْ  
ذُو نُكُمْ لَا يَأْتِي لَنُكُمْ حَبَّ الْأَوْدُّ وَمَا عَنْتُمْ قَدْ  
بَدَأْتُ الْعَفَضَاءِ مِنْ أَنْوَاهِهِ وَمَا تَحْقِنُ صُدُورُهُمْ  
الْكَبُرُ قَدْ بَيَكَنَّا لَكُمُ الْأَلْيَتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۝

هَلَّا نَتَّخُوا لَهُ مُجْبِونَ هُمْ وَلَا يُجْبِونَنَّكُمْ وَلَا تُؤْمِنُونَ  
بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَلَا الْقُولُمْ قَالُوا أَمَّا هُنَّا  
عَصُومُوا عَلَيْنَا كُلُّ الْكَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُؤْمِنُوا  
يَقْبِطُكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِ بِذَاتِ الْقُدُورِ ۝

إِنْ تَمْسِكُمْ حَسَنَةً سَوْفَ هُمْ وَلَنْ يُصِبِّكُمْ  
سَيِّئَةً يَفِرُّ حُوَابُهَا وَلَنْ تَصِرُّوْا وَلَا تَقُولُوا  
لَا يَفْرُرُ كُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا  
يَعْمَلُونَ مُعْنِظٌ ۝

121. تथा (हे नबी!) वह समय याद करो जब आप प्रातः अपने घर से निकले, ईमान वालों को युद्ध<sup>[1]</sup> के स्थानों पर नियुक्त कर रहे थे, तथा अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।
122. तथा (याद करो) जब तुम में से दो गिरोहों<sup>[2]</sup> ने कायरता दिखाने का विचार किया, और अल्लाह उन का रक्षक था। तथा ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये।
123. अल्लाह बद्र में तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब कि तुम निर्बल थे।

1 साधारण भाष्यकारों ने इसे उहूद के युद्ध से संबंधित माना है। जो बद्र के युद्ध के पश्चात् सन् ۳ हिज्री में हुआ। जिस में कुरैश ने बद्र की पराजय का बदला लेने के लिये तीन हज़ार की सेना के साथ उहूद पर्वत के समीप पड़ाव डाल दिया। जब आप को इस की सूचना मिली तो मुसलमानों से परामर्श किया। अधिकांश की राय हुई कि मदीना नगर से बाहर निकल कर युद्ध किया जाये। और आप सलल्लाहु अलैहि व सल्लम एक हज़ार मुसलमानों को लेकर निकले। जिस में से अब्दुल्लाह बिन उबय्य मुनाफिकों का मुख्या अपने तीन सौ साथियों के साथ वापिस हो गया। आप ने रणक्षेत्र में अपने पीछे से शत्रु के आक्रमण से बचाव के लिये 70 धनुर्धरों को नियुक्त कर दिया। और उन का सेनापति अब्दुल्लाह बिन जुबैर को बना दिया। तथा यह आदेश दिया कि कदापि इस स्थान को न छोड़ना। युद्ध आरंभ होते ही कुरैश पराजित हो कर भाग खड़े हुये। यह देख कर धनुर्धरों में से अधिकांश ने अपना स्थान छोड़ दिया। कुरैश के सेनापति ख़ालिद पुत्र वलीद ने अपने सवारों के साथ फिर कर धनुर्धरों के स्थान पर आक्रमण कर दिया। फिर अकस्मात् मुसलमानों पर पीछे से आक्रमण कर के उन की विजय को पराजय में बदल दिया। जिस में आप सलल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी आघात पहुँचा। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

2 अर्थात् दो कबीले बनू सलमा तथा बनू हारिसा ने भी अब्दुल्लाह बिन उबय्य के साथ वापिस हो जाना चाहा। (सहीह बुखारी हदीस 4558)

وَإِذْ عَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبُوئِ الْمُؤْمِنِينَ  
مَقَاعِدَ لِلْقَاتَلِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلَيْهِ ۝

إِذْ هَبَتْ قَلَّبَتِنِ مِنْكُمْ أَنْ تَقْتَلُوا وَاللَّهُ  
وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلِيَوْكِلُ الْمُؤْمِنُونَ ۝

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِيَدِكُمْ إِذْ كُنْتُمْ  
فِي الْقُوَّالَةِ ۝

अतः अल्लाह से डरते रहो, ताकि  
उस के कृतज्ञ रहो।

كَعَلَّمُ شَكُونَ ④

124. (हे नबी! वह समय भी याद करें)  
जब आप ईमान वालों से कह रहे  
थे: क्या तुम्हारे लिये यह बस नहीं  
है कि अल्लाह तुम्हें (आकाश से)  
उतारे हुये तीन हजार फ़रिश्तों द्वारा  
समर्थन दे?

إذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَنْ يَكْفِيْكُمْ أَنْ يُمْدَدُكُمْ  
بِرَبِّكُمْ بِشَكْوَةِ الْفِيْ مِنَ الْمَلِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ④

125. क्यों<sup>[1]</sup> नहीं? यदि तुम सहन करोगे,  
तथा आज्ञाकारी रहोगे, और वह  
(शत्रु) तुम्हारे पास अपनी इसी  
उत्तेजना के साथ आ गये, तो  
तुम्हारा पालनहार तुम्हें (तीन नहीं)  
पाँच हजार चिन्ह<sup>[2]</sup> लगे फ़रिश्तों  
द्वारा समर्थन देगा।

بَلْ إِنْ تَصِرُّوا وَتَسْقُوا وَيَا تُوكِمْ قُورِهُ  
هَذَا يُمْدِدُكُمْ بِرَبِّكُمْ خَمْسَةَ الْفِيْ مِنَ الْمَلِكَةِ  
مُسْوِيْنَ ④

126. और अल्लाह ने इस को तुम्हारे लिये  
केवल शुभ सूचना बनाया है। और  
ताकि तुम्हारे दिलों को संतोष हो  
जाये, और समर्थन तो केवल अल्लाह  
ही के पास से है, जो प्रभुत्वशाली  
तत्वज्ञ है।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بَرَى لِكُمْ وَلَعَظِيمَنَ قُلُوبَكُمْ  
بِهِ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَكِيرِ ④

127. ताकि<sup>[3]</sup> वह काफिरों का एक भाग  
काट दे, अथवा उन को अपमानित  
कर दे। फिर वह असफल वापिस हो  
जायें।

لِيَقْطُعَ طَرَقًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَأَوْيَكِتَهُمْ  
فَيَنْقِلُبُوا خَاسِيْنَ ④

1 अर्थात् इतना समर्थन बहुत है।

2 अर्थात् उन पर तथा उन के घोड़ों पर चिन्ह लगे होंगे।

3 अर्थात् अल्लाह तुम्हें फ़रिश्तों द्वारा समर्थन इस लिये देगा ताकि काफिरों का कुछ बल तोड़ दे, और उन्हें निष्फल वापिस कर दे।

128. हे नबी! इस<sup>[1]</sup> विषय में आप को कोई अधिकार नहीं, अल्लाह चाहे तो उन की क्षमा याचना स्वीकार<sup>[2]</sup> करे, या दण्ड<sup>[3]</sup> दे, क्यों कि वह अत्याचारी हैं।
129. अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है, वह जिसे चाहे क्षमा करे, और जिसे चाहे दण्ड दे। तथा अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
130. हे ईमान वालो! कई कई गुणा कर के ब्याज<sup>[4]</sup> न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि सफल हो जाओ।
131. तथा उस अग्नि से बचो जो काफिरों के लिये तैयार की गयी है।
132. तथा अल्लाह और रसल के आज्ञाकारी रहो, ताकि तुम पर दया की जाये।
133. और अपने पालनहार की क्षमा और उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ,

لَيْسَ لَكُمْ مِنَ الْأَكْرَمِيْنَ أَوْ يَعْلَمُ عَلَيْهِمْ  
أَوْ يَعْلَمُ بِهِمْ فَإِنَّمَا ظَلَمُونَ ۝

وَلَئِنْ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ يَغْفِرُ لَهُنَّ  
يَشَاءُ وَيَعْلَمُ بُمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا كُلُوا الرِّبَآءَ  
أَضْعَافًا مُضْعَفَةً شُوَا لَقْوَ اللَّهُ لَعْلَكُمْ  
تُفْلِحُونَ ۝

وَأَنْتُمُ الظَّالِمُونَ أُعِدَّتْ لِلْكُفَّارِينَ ۝

وَأَطْبِعُوا اللَّهُ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تَرْحَمُونَ ۝

وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ وَمِنْ زِنْكُوهُ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا

1 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ज्ज की नमाज में रुकूअ के पश्चात् यह प्रार्थना करते थे कि हे अल्लाह! अमुक को अपनी दया से दूर कर दे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी - 4559)

2 अर्थात् उन्हें मार्गदर्शन दे।

3 यदि काफिर ही रह जायें।

4 उहुद की पराजय का कारण धन का लोभ बना था। इस लिये यहाँ ब्याज से सावधान किया जा रहा है, जो धन के लोभ का अति भयावह साधन है। तथा आज्ञाकारिता की प्रेरणा दी जा रही है। कई कई गुणा ब्याज न खाने का अर्थ यह नहीं कि इस प्रकार ब्याज न खाओ, बल्कि ब्याज अधिक हो या थोड़ी सर्वथा हराम (वर्जित) है। यहाँ जाहिलियत के युग में ब्याज की जो रीति थी, उस का वर्णन किया गया है। जैसा कि आधुनिक युग में ब्याज पर ब्याज लेने की रीति है।

जिस की चौड़ाई आकाशों तथा  
धरती के बराबर है, आज्ञाकारियों के  
लिये तैयार की गयी है।

134. जो सुविधा तथा असुविधा की दशा  
में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध  
पी जाते, और लोगों के दोष क्षमा  
कर दिया करते हैं। और अल्लाह  
सदाचारियों से प्रेम करता है।
135. और जब कभी वह कोई बड़ा पाप  
कर जायें, अथवा अपने ऊपर  
अत्याचार कर लें, तो अल्लाह को  
याद करते हैं, फिर अपने पापों के  
लिये क्षमा माँगते हैं। तथा अल्लाह के  
सिवा कौन है, जो पापों को क्षमा  
करे? और अपने किये पर जान बूझ  
कर अड़े नहीं रहते।
136. इन्हीं का प्रतिफल (बदला) उनके  
पालनहार की क्षमा तथा ऐसी स्वर्ग है  
जिन में नहरें प्रवाहित हैं, जिन में वह  
सदावासी होंगे, तो क्या ही अच्छा है  
सत्कर्मियों का यह प्रतिफल?
137. तुम से पहले भी इसी प्रकार हो  
चुका<sup>[1]</sup> है। तुम धरती में फिरो और  
देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम  
कैसा रहा?
138. यह (कुर्�आन) लोगों के लिये एक वर्णन  
तथा माँग दर्शन, और एक शिक्षा है  
(अल्लाह से) डरने वालों के लिये।

السَّمُوٰتُ وَالْأَرْضُ أَعْدَتَا لِلنَّبِيِّنَ ①

الَّذِينَ يُنْفَقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالْفَرَّاءِ وَالْكَظِيمِ  
الْغَيْظِ وَالْعَافِفِينَ عَنِ النَّاسِ وَاللَّهُ يُحِبُّ  
الْمُخْسِنِينَ ②

وَالَّذِينَ إِذَا أَفْعَلُوا فَاجْشَأُوا أَنفُسَهُمْ  
ذَكَرُوا اللَّهَ فَأَسْعَفُوا الَّذِينُ يُهْمِمُونَ ۚ وَمَنْ يَغْفِرُ  
الَّذِينَ تُوبُ إِلَى اللَّهِ ۗ وَلَمْ يُعْصِرُوا عَلَى  
مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ③

أَوْلَئِكَ جَرَآءُهُمْ مُغْنِفَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ  
وَجَنَثٌ تَّعْرِيٌّ مِّنْ تَعْرِيَةِ الْأَنْهَرِ خَلِدِينَ  
فِيهَا وَنِعْمَ أَجْرُ الْغَيْلِينَ ④

فَدُخَلُتُ مِنْ قَبْلِكُمْ سَنِينَ فَسِيرُوا فِي  
الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَالِيَّهُ  
الْمُكَذِّبُونَ ⑤

هَذَا بَيْانٌ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَمُوعِظَةٌ  
لِلنَّبِيِّنَ ⑥

1 उहुद की पराजय पर मुसलमानों को दिलासा दी जा रही है जिस में उन के 70 व्यक्ति मारे गये। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

139. (इस पराजय से) तुम निर्बल तथा उदासीन न बनो। और तुम ही सर्वोच्च रहोगे, यदि तुम ईमान वाले हो।

140. यदि तुम्हें कोई घाव लगा है, तो कौम (शत्रु)<sup>[1]</sup> को भी इसी के समान घाव लग चुका है। तथा उन दिनों को हम लोगों के बीच फेरते रहते<sup>[2]</sup> हैं। और ताकि अल्लाह उन को जान ले<sup>[3]</sup> जो ईमान लाये, और तुम में से साक्षी बनाये। और अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नहीं करता।

141. तथा ताकि अल्लाह उन्हें शुद्ध कर दे, जो ईमान लाये हैं, और काफिरों का नाश कर दे।

142. क्या तुम ने समझ रखा है कि स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे? जब कि अल्लाह ने (परीक्षा कर के) उन्हें नहीं जाना है जिन्होंने तुम में से जिहाद किया है, और न सहनशीलों को जाना है?

143. तथा तुम मौत की कामना कर<sup>[4]</sup> रहे थे इस से पूर्व कि उस का सामना करो, तो अब तुम ने उसे आँखों से देख लिया है, और देख रहे हो।

وَلَا يَهْتَوُا لِأَخْزَنَوْا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑥

إِنْ يَمْسِكُمْ فَرَحٌ فَقَدْ مَسَ الْقَوْمَ فَرَحٌ مِثْلُهُ وَتِلْكَ الْأَيَامُ نَدَا وَلَهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلَمْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَسْخَدُ مِنْكُمْ شَهَدَآءُ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّلِيمِينَ ⑦

فَلِمَنْحَصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَى الْكُفَّارُ ⑧

أَمْ حَبَّبْنَا أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَئِنْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ جَهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمُ الصَّابِرُونَ ⑨

وَلَقَدْ كُثُرَتْ مَعْنَوُنَ الْحُوتَ مِنْ مَلِّ أَنْ تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝

1 इस में कुरैश की बद्र में पराजय और उन के 70 व्यक्तियों के मारे जाने की ओर संकेत है।

2 अर्थात् कभी किसी की जीत होती है, कभी किसी की।

3 अर्थात् अच्छे बुरे में विवेक (अन्तर) कर दे।

4 अर्थात् अल्लाह की राह में शहीद हो जाने की।

144. مُحَمَّدٌ كَمَا كَمِيلٌ  
الرَّسُولُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ افْتَلَتْ عَلَى  
أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْتَلِبْ عَلَى عَيْبِهِ فَلَنْ  
يُفْلِتَ لِلَّهِ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الظَّالِمِينَ ⑥
145. مُحَمَّدٌ كَمَا كَمِيلٌ  
الرَّسُولُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ افْتَلَتْ عَلَى  
أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْتَلِبْ عَلَى عَيْبِهِ فَلَنْ  
يُفْلِتَ لِلَّهِ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الظَّالِمِينَ ⑥
146. مُحَمَّدٌ كَمَا كَمِيلٌ  
الرَّسُولُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ افْتَلَتْ عَلَى  
أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْتَلِبْ عَلَى عَيْبِهِ فَلَنْ  
يُفْلِتَ لِلَّهِ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الظَّالِمِينَ ⑥

وَمَا كَانَ لِنَفِيسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا يَرَذِّلُنَّ اللَّهُ كِتَابًا  
مُؤْجَلاً وَمَنْ يُرِدُ تَوَابَ الدُّنْيَا تُؤْتِهِ مِنْهَا  
وَمَنْ يُرِدُ تَوَابَ الْآخِرَةِ تُؤْتِهِ مِنْهَا  
وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ ⑦

وَكَيْنُ مِنْ نَّبِيٍّ قُتِلَ مَعَهُ رِتَبُونَ  
كَثِيرٌ فِيهَا وَهُنَّا إِمَامًا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلٍ  
اللَّهُ وَمَا أَضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَلُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ  
الظَّاهِرِينَ ⑧

۱ اَर्थात् इस्लाम से फिर जावोगे भावार्थ यह है कि सत्थर्म इस्लाम स्थायी है नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के न रहने से समाप्त नहीं हो जायेगा। उहुद में जब किसी विरोधी ने यह बात उड़ाई कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मार दिये गये तो यह सुन कर बहुत से मुसलमान हताश हो गये। कुछ ने कहा कि अब लड़ने से क्या लाभ? तथा मुनाफिकों ने कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) नबी होते तो मार नहीं खाते। इस आयत में यह संकेत है कि दूसरे नवियों के समान आप को भी एक दिन संसार से जाना है। तो क्या तुम उन्हीं के लिये इस्लाम को मानते हो, और आप नहीं रहेंगे तो इस्लाम नहीं रहेगा?

147. तथा उन का कथन वस यही था कि उन्हों ने कहा: हे हमारे पालनहार! हमारे लिये हमारे पापों को क्षमा कर दे, तथा हमारे विषय में हमारी अति को, और हमारे पैरों को दृढ़ कर दे, और काफिर जाति के विरुद्ध हमारी सहायता कर।

148. तो अल्लाह ने उन को संसारिक प्रतिफल तथा आखिरत (परलोक) का अच्छा प्रतिफल प्रदान कर दिया, तथा अल्लाह सुकर्मियों से प्रेम करता है।

149. हे ईमान वालो! यदि तुम काफिरों की बात मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एडियों के बल फेर देंगे, और तुम फिर से क्षति में पड़ जाओगे।

150. बल्कि अल्लाह तुम्हारा रक्षक है तथा वह सब से अच्छा सहायक है।

151. शीघ्र ही हम काफिरों के दिलों में तुम्हारा भय डाल देंगे, इस कारण कि उन्हों ने अल्लाह का साझी उसे बना लिया है, जिस का कोई तर्क (प्रमाण) अल्लाह ने नहीं उतारा है, और इन का आवास नरक है, और वह क्या ही बुरा आवास है?

152. तथा अल्लाह ने तुम से अपना वचन सच कर दिखाया है, जब तुम उस की अनुमति से उन को काट<sup>[1]</sup> रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम ने

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ لِلآنِ قَالُوا رَبَّنَا الْغَيْرُ  
لَنَا ذُنُوبُنَا وَإِسْرَافُنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبَّتَ  
أَقْدَامَنَا وَانصَرَنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَفِرِينَ ⑥

فَاتَّسْهُمُ اللَّهُ تَوَابُ الدُّنْيَا وَخُسْنَ تَوَابُ  
الْآخِرَةِ ۚ وَاللَّهُ يُعِظُّ الْمُحْسِنِينَ ۖ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ تَطْبِيعُ الْكَذِبِينَ  
كُفَّرٌ وَّا يَرِدُونَ لَهُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُفَّرٍ فَتَنْقِلُونَ  
خَسِيرِينَ ۖ ۷

بِاللَّهِ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ خَيْرُ النَّصِيرِينَ ۘ

سَنُلْقِنُ فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا  
أَشْرَكُوا يَا أَيُّهُمْ مَا لَهُ يُؤْلِمُ بِهِ سُلْطَنًا  
وَمَا ذُنُوبُ النَّازِلِ وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ۸

وَلَقَدْ صَدَقُوكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ حَسُونُهُمْ  
إِذَا دُرِّبُوكُمْ حَتَّىٰ إِذَا فَشَلْتُمْ وَتَنَزَّلُتُمْ فِي  
الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا أَرْكَمْتُمْ ۙ

1 अर्थात् उहद के आरंभिक क्षणों में।

कायरता दिखायी, तथा (रसूल के) आदेश<sup>[1]</sup> में विभेद कर लिया और अवैज्ञा की, इस के पश्चात् कि तुम्हें वह (विजय) दिखा दी, जिसे तुम चाहते थे, तुम में से कुछ संसार चाहते हैं, तथा कुछ लोग परलोक चाहते हैं। फिर तुम्हें उन से फेर दिया, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले, और तुम्हें क्षमा कर दिया, तथा अल्लाह ईमान वालों के लिये दानशील है।

153. (और याद करो) जब तुम चढ़े (भाग) जा रहे थे, और किसी की ओर मुड़ कर नहीं देख रहे थे, और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार<sup>[2]</sup> रहे थे, तो (अल्लाह ने) तुम्हें शोक के बदले शोक दे दिया, ताकि जो तुम से खो गया और जो दुख तुम्हें पहुँचा उस पर उदासीन न हो, तथा अल्लाह उस से सूचित है, जो तुम कर रहे हो।

154. फिर तुम पर शोक के पश्चात् शान्ति (ऊँघ) उतार दी जो तुम्हारे एक गिरोह<sup>[3]</sup> को आने लगी, और

تُعْبُونَ مِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ تُؤْخَرُ فَلَمْ يَعْنِهُمْ لِيَبْتَلِيهِمْ وَلَقَدْ عَفَ عَنْكُمْ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ⑩

إذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلُونَ عَلَى أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرِكُمْ فَإِذَا كُلُّكُمْ غَنِيًّا بِغِنِيَّةِ لِكِيلًا تَخْرُجُوا عَلَى مَا قَاتَلُوكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ وَاللَّهُ حَمِيرٌ بِهَا تَعْمَلُونَ ⑩

تُرْأَزِلُ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمَّ أَمْنَةً تُعَاصِيَنْعَشِي كَلَيْفَةً مِنْكُمْ وَطَائِفَةً قَدْ أَهْمَمْتُهُمْ أَنْسَهُمْ

1 अर्थात् कुछ धनुर्धरों ने आप के आदेश का पालन नहीं किया, और परिहार का धन संचित करने के लिये अपना स्थान त्याग दिया, जो पराजय का कारण बन गया। और शत्रु को उस दिशा से आक्रमण करने का अवसर मिल गया।

2 बराअ बिन आजिब कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उहूद के दिन अब्दुल्लाह बिन जूबैर को पैदल सेना पर रखा। और वह पराजित हो कर आ गये, इसी के बारे में यह आयत है। उस समय नबी के साथ बारह व्यक्ति ही रह गये। (सहीह बुखारी -4561)

3 अबु तल्हा रजियल्लाह अन्हु ने कहा: हम उहूद में ऊँघने लगे। मेरी तलवार मेरे हाथ से गिरने लगती और मैं पकड़ लेता, फिर गिरने लगती और पकड़ लेता।

एक गिरोह को अपनी<sup>[1]</sup> पड़ी हुई थी। वह अल्लाह के बारे में असत्य जाहिलियत की सोच सोच रहे थे। वह कह रहे थे कि क्या हमारा भी कुछ अधिकार है? (हे नबी!) कह दें कि सब अधिकार अल्लाह को है। वह अपने मनों में जो छूपा रहे थे आप को नहीं बता रहे थे। वह कह रहे थे कि यदि हमारा कुछ भी अधिकार होता, तो यहाँ मारे नहीं जाते, आप कह दें: यदि तुम अपने घरों में रहते, तब भी जिन के (भाग्य में) मारा जाना लिखा है, वह अपने निहत होने के स्थानों की ओर निकल आते। और ताकि अल्लाह, जो तुम्हारे दिलों में है उस की परीक्षा ले। तथा जो तुम्हारे दिलों में है उसे शुद्ध कर दो। और अल्लाह दिलों के भेदों से अवगत है।

**155. वस्तृतः** तुम में से जिन्हों ने दो गिरोहों के सम्मुख होने के दिन मुँह फेर दिया, शैतान ने उन को उन के कुछ कुकर्मा के कारण फिसला दिया। तथा अल्लाह ने उन को क्षमा कर दिया है। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील सहनशील है।

**156. हे ईमान वालो!** उन के समान न हो जाओ जो काफिर हो गये, तथा अपने भाईयों से- जब यात्रा में हों, अथवा युद्ध में- कहा कि यदि वह हमारे पास होते तो न मरते और

(सहीह बुखारी -4562)

1 यह मुनाफ़िक लोग थे।

يَظْهُونَ بِاللَّهِ عَزَّالْعَزَّى كُلَّ أَجَاهِيلَةٍ يَقُولُونَ  
هُلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلُّهُ يَنْتَهُ  
يَعْلَمُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ مَا لَا يُبَدِّلُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ  
كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ تَأْفِلُنَا هُنَّا قُلْ لَوْكَانُونَ  
يَبْتَلُكُ لِبَرَّ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقُتْلُ إِلَى  
مَضَاجِعِهِمْ وَلَيَبْتَلِ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ  
وَلِيَمْحَصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَيْمٌ بِمَا تَعْمَلُونَ  
الْفُسُودُ

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلُّو مِنْكُمْ رَبَّنِيَ الْجَمِيعُ إِنَّمَا  
إِسْرَارُهُمُ الشَّيْطَنُ بِعِصْمَانِكُبُوأَلْقَدْعَفَا  
اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَآتِينَ كُفَّارًا  
وَقَاتُلُوا إِخْرَانِهِمْ إِذَا دَرَأُوكُمْ أَوْ كَانُوا  
غُرَّى لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَأْتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ  
اللَّهُ ذَلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ

न मारे जाते, ताकि अल्लाह उन के दिलों में इसे संताप बना दे। और अल्लाह ही जीवित करता तथा मौत देता है, और अल्लाह जो तुम कर रहे हो उसे देख रहा है।

157. यदि तुम अल्लाह की राह में मार दिये जाओ अथवा मर जाओ, तो अल्लाह की क्षमा उस से उत्तम है जो लोग एकत्र कर रहे हैं।
158. तथा यदि तुम मर गये अथवा मार दिये गये, तो अल्लाह ही के पास एकत्र किये जाओगे।
159. अल्लाह की दया के कारण ही आप उन के<sup>[1]</sup> लिये कोमल (सुशील) हो गये, और यदि आप अक्खड़ तथा कड़े दिल के होते, तो वह आप के पास से बिखर जाते। अतः उन्हें क्षमा कर दो, और उन के लिये क्षमा की प्रार्थना करो, तथा उन से भी मुआमले में परामर्श करो, फिर जब कोई दृढ़ संकल्प ले लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्सदेह अल्लाह भरोसा रखने वालों से प्रेम करता है।
160. यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे तो तुम पर कोई प्रभुत्व नहीं पा सकता। तथा यदि तुम्हारी सहायता न करे, तो फिर कौन है जो उस के पश्चात् तुम्हारी सहायता कर सके? अतः ईमान वालों को अल्लाह

وَيُبَيِّنُتْ وَإِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ<sup>①</sup>

وَلَئِنْ قُتِلُّتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُنْظَمَ لِغَيْرِهِ مِنْ  
اللَّهُ وَرَحْمَةً خَيْرٌ مِنَ الْجَمَاعَونَ<sup>②</sup>

وَلَئِنْ مُسْتَمْأَتٌ أَوْ قُتِلُّتُمْ لَا إِلَهَ مُحَشَّرُونَ<sup>③</sup>

فِيمَا رَحْمَةٌ مِنَ الْهَوَى لَنَّهُمْ وَلَوْكُنْتَ فَطِيفًا  
عَلَيْهِنَّ الْقَلْبُ لَا يُغَصُّونَ حَوْلَكَ فَاغْفُ  
عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَأْوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا  
عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ  
الْمُتَوَكِّلِينَ<sup>④</sup>

إِنْ يَنْصُرُكُمُ اللَّهُ فَلَا يَنْلَمِبُ لَهُمْ وَإِنْ يَخْدُلُكُمْ فَهُنَّ  
ذَلِكُنَّ الَّذِينَ يَنْصُرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ وَعَلَى اللَّهِ  
قَلِيلُ الْمُؤْمِنُونَ<sup>⑤</sup>

<sup>1</sup> अर्थात् अपने साथियों के लिये, जो उहूद में रणक्षेत्र से भाग गये।

ही पर भरोसा करना चाहिये।

161. किसी नबी के लिये योग्य नहीं कि अपभोग<sup>[1]</sup> करो और जो अपभोग करेगा, प्रलय के दिन उसे लायेगा फिर प्रत्येक प्राणी को उस की कमाई का भरपूर प्रतिकार (बदला) दिया जायेगा, तथा उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।
162. तो क्या जिस ने अल्लाह की प्रसन्नता का अनुसरण किया हो उस के समान हो जायेगा जो अल्लाह का क्रोध<sup>[2]</sup> लेकर फिरा, और उस का आवास नरक है?
163. अल्लाह के पास उन की श्रेणियाँ हैं, तथा अल्लाह उसे देख<sup>[3]</sup> रहा है जो वह कर रहे हैं।
164. अल्लाह ने ईमान वालों पर उपकार किया है कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन के सामने उस (अल्लाह) की आयतें सुनाता है, और उन्हें शुद्ध करता है तथा उन्हें पुस्तक (कुर्�आन) और हिक्मत (सुन्नत) की शिक्षा देता है, यद्यपि

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَعْلَمُ مَمَنْ يَعْلَمُ لِيَأْتِ بِهَا  
غَلَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ تَحْتَوْيَ كُلُّ نَفْسٍ تَّاکِبَتْ  
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ①

أَفَعَيْنَ أَتَبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَنْ يَأْتِ بِسَخْطِ مِنَ  
اللَّهِ وَمَا مَأْلِهُ جَهَنَّمُ وَإِنَّمَا الْمُصْبِرُ ②

هُمْ دَرَجَتْ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا يَصِيرُ بِهَا  
يَعْمَلُونَ ③

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا  
مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَنذِلُ عَلَيْهِمْ رِزْكَهُمْ وَإِنَّ رِزْكَهُمْ  
وَيَعْلَمُهُمُ الْكِتَابُ وَالْحِكْمَةُ وَإِنْ كَانُوا مِنْ  
قَبْلِ لِقَاءِ صَلِيلٍ مُّبِينٍ ④

1 उहूद के दिन जो अपना स्थान छोड़ कर इस विचार से आ गये कि यदि हम न पहुँचे तो दूसरे लोग ग़नीमत का सब धन ले जायेंगे, उन्हें यह चेतावनी दी जा रही है कि तुम ने कैसे सोच लिया कि इस धन में से तुम्हारा भाग नहीं मिलेगा, क्या तुम्हें नबी (سَلَّلَ اللّٰهُ عَلٰیْہِ وَسَلَّمَ وَسَلَّمَ) की अमानत पर भरोसा नहीं है? सुन लो! नबी से किसी प्रकार का अपभोग असम्भव है। यह घोर पाप है जो कोई नबी कभी नहीं कर सकता।

2 अर्थात् पापों में लीन रहा।

3 अर्थात् लोगों के कर्मों के अनुसार उन की अलग अलग श्रेणियाँ हैं।

वह इस से पहले खुले कुपथ में थे।

165. तथा जब तुम को एक दुःख पहुँचा<sup>[1]</sup>  
जब कि इस के दुगना तुम ने  
पहुँचाया<sup>[2]</sup>, तो तुम ने कह दिया  
कि यह कहाँ से आ गया? (हे  
नबी!) कह दो: यह तुम्हारे पास से<sup>[3]</sup>  
आया। वास्तव में अल्लाह जो चाहे  
कर सकता है।
166. तथा जो भी आपदा दो गिरोहों के  
सम्मुख होने के दिन तुम पर आई,  
तो वह अल्लाह की अनुमति से, और  
ताकि वह ईमान वालों को जान ले।
167. और ताकि उन को जान ले, जो  
मुनाफ़िक़ हैं। और उन से कहा गया  
कि आओ अल्लाह की राह में युद्ध  
करो, अथवा रक्षा करो, तो उन्होंने  
ने कहा कि यदि हम युद्ध होना  
जानते तो अवश्य तुम्हारा साथ देते।  
वह उस दिन ईमान से अधिक कुफ़्र  
के समीप थे, वह अपने मुखों से  
ऐसी बात बोल रहे थे जो उन के  
दिलों में नहीं थी। तथा अल्लाह जिसे  
वह छुपा रहे थे, अधिक जानता था।
168. इन्होंने ही अपने भाईयों से कहा,  
और (स्वयं घरों में) आसीन रह  
गये: यदि वह हमारी बात मानते,  
तो मारे नहीं जाते! (हे नबी!) कह

1 अर्थात् उहुद के दिन।

2 अर्थात् बद्र के दिन।

3 अर्थात् तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश का विरोध करने के कारण आया, जो धनुर्धरों को दिया गया था।

أَوْلَئِنَا أَصَابَتْكُمْ مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبَّنَا وَمُشْلِّهَا  
فَلَمَّا آتَى هَذَا قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِنَا فَنِسِكُمْ إِنَّ  
اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ④

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّقْرِيرِ الْجَمِيعُونَ فِيمَا دُنِّيَ اللَّهُ  
وَلِيَعْلَمُ الْمُؤْمِنُونَ ⑤

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ تَأْفَعُوا وَقَلِيلُهُمْ تَعَالَوْا فَإِنَّ لَهُمْ  
سَيِّئَاتٌ أَوْ أَدْعَوْا نَفْعًا فَالَّذِينَ عَلِمُوا فَإِنَّ أَلَّا  
لَا يَتَبَعَّلُمُهُمْ هُمْ لِلْكُفَّارِ يَوْمَئِنَ أَقْرَبُ مِنْهُمْ  
لِلْأَيْمَانِ يَقُولُونَ يَا أَفْوَاهُمْ تَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ  
وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْسِبُونَ ⑥

الَّذِينَ قَاتَلُوا لِلْحُوَاجِنِهِمْ وَقَعْدُوا لِأَطْلَاقِهِنَّا مَا  
فَتَلُوا وَقُلْ فَادْرُوا عَنْ أَنْفُسِكُمُ الْمُؤْمِنُاتِ إِنْ كُنْتُمْ  
صَدِيقِينَ ⑦

दो: फिर तो मौत से<sup>[1]</sup> अपनी रक्षा कर लो, यदि तुम सच्चे हो।

169. जो अल्लाह की राह में मार दिये गये तो तुम उन को मरा हुआ न समझो, बल्कि वह जीवित है,<sup>[2]</sup> अपने पालनहार के पास जीविका दिये जा रहे हैं।

170. तथा उस से प्रसन्न है जो अल्लाह ने उन्हें अपनी दया से प्रदान किया है, और उन के लिये प्रसन्न (हर्षित) हो रहे हैं जो उन से मिले नहीं, उन के पीछे<sup>[3]</sup> रह गये हैं कि उन्हें कोई डर नहीं होगा, और न वह उदासीन होगा।

171. वह अल्लाह के पुरस्कार और प्रदान के कारण प्रसन्न हो रहे हैं। तथा इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

172. जिन्होंने अल्लाह और रसूल की पुकार को स्वीकार<sup>[4]</sup> किया, इस के

1 अर्थात् अपने उपाय से सदाजीवी हो जाओ।

2 शहीदों का जीवन कैसा होता है? हदीस में है कि उन की आत्मायें हरे पक्षियों के भीतर रख दी जाती हैं और वह स्वर्ग में चुगते तथा आनन्द लेते फिरते हैं। (सहीह मुस्लिम- हदीस -1887)

3 अर्थात् उन मुजाहिदीन के लिये जो अभी संसार में जीवित रह गये हैं।

4 जब काफ़िर उहुद से मक्का वापिस हुये तो मदीने से 30 मील दूर "रौहाअ" से फिर मदीने वापिस आने का निश्चय किया। जब आप सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम को सूचना मिली तो सेना लेकर "हमराउल असद" तक पहुँचे जिसे सुन कर वह भाग गये। इधर मुसलमान सफल वापिस आये। इस आयत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के साथियों की सराहना की गई है जिन्होंने ने उहुद में घाव खाने के पश्चात् भी नबी (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) का साथ दिया। यह आयतें इसी से संबंधित हैं।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتُلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَالًا إِلَّا  
أَحْيَاهُ اللَّهُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرَزَّقُونَ ⑥

فَرِجَّعُونَ بِمَا أَنْتُمْ هُنَّا لِلَّهِ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبِّرُونَ  
بِالَّذِينَ لَمْ يَلْعَمُوا بِهِمْ مِنْ حَلْفِهِمْ الْأَخْوَفُونَ  
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَعْزِزُونَ ۖ

يَسْتَبِّرُونَ بِنِعْمَةِ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلِهِ وَإِنَّ اللَّهَ  
لَا يُضِيقُ بِأَخْرَى الْمُؤْمِنِينَ ۖ

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا

पश्चात् कि उन्हें आघात पहुँचा,  
उन में से उन के लिये जिन्होंने ने  
सुकर्म किया तथा (अल्लाह से) डरे,  
महा प्रतिफल है।

173. यह वह लोग हैं, जिन से लोगों  
ने कहा कि तुम्हारे लिये लोगों  
(शत्रु) ने (वापिस आने का) संकल्प<sup>[1]</sup>  
लिया है। अतः उन से डरो, तो इस  
ने उन के ईमान को और अधिक  
कर दिया, और उन्होंने कहा: हमें  
अल्लाह बस है, और वह अच्छा  
काम बनाने वाला है।
174. तथा अल्लाह के अनुग्रह एवं दया  
के साथ<sup>[2]</sup> वापिस हुये। उन्हें कोई  
दुख नहीं पहुँचा। तथा अल्लाह की  
प्रसन्नता पर चले, और अल्लाह बड़ा  
दयाशील है।
175. वह शैतान है, जो तुम्हें अपने  
सहयोगियों से डरा रहा है, तो उन<sup>[3]</sup>  
से न डरो, तथा मुझी से डरो यदि  
तुम ईमान वाले हो।
176. हे नबी! आप को वह काफिर  
उदासीन न करें, जो कुफ्र में  
अग्रसर हैं, वह अल्लाह को कोई  
हानि नहीं पहुँचा सकेंगे। अल्लाह  
चाहता है कि आखिरत (परलोक) में

أَصَابَهُمُ الْقُرْحٌ لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَأَنْفَقُوا أَجْرًا  
عَظِيمًا ۝

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمِيعُوا  
لَكُمْ فَأَخْسِرُهُمْ فَرَادُهُمْ إِنَّمَا يُؤْكِلُونَا  
اللَّهُ وَنَعَمُ الْوَكِيلُ ۝

فَإِنْ قَاتَلُوكُمْ إِنْعَمَةٌ مِّنْ أَنْفُسِهِمْ فَقُضِيلُ لَهُمْ سَبَبُهُمْ  
سُوءٌ وَّلَيَّبُوكُمْ رِضْوَانُ اللَّهِ وَإِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٌ ۝

إِنَّمَا ذَلِكُوا الشَّيْطَنُ يُغَوِّتُ أَهْلَيَّاً هُنَّ فَلَأْ  
عَاقِبُوهُمْ وَلَخَافُونَ إِنَّ اللَّهَ مُؤْمِنُينَ ۝

وَلَا يَخْرُنُكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّمَا  
يَضْرُبُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِ بِرِبِّنِدِ اللَّهِ الْأَجَمِعِنِ لَهُمْ حَطَافٌ  
الْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

1 अर्थात् शत्रु ने मङ्का जाते हुये राह में सोचा कि मुसलमानों के परास्त हो जाने पर यह अच्छा अवसर था कि मदीने पर आक्रमण कर के उन का उन्मूलन कर दिया जाये, तथा वापिस आने का निश्चय किया। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

2 अर्थात् "हमराउल असद" से मदीना वापिस हुये।

3 अर्थात् मिश्रणवादियों से।

उन का कोई भाग न बनाये, तथा  
उन्हीं के लिये घोर यातना है।

177. वस्तुतः जिन्हों ने ईमान के बदले  
कुफ्र ख़रीद लिया, वह अल्लाह को  
कोई हानि नहीं पहुँचा सकेंगे, तथा  
उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

178. जो काफिर हो गये, वह कदापि  
यह न समझें कि हमारा उन को  
अवसर<sup>[1]</sup> देना उन के लिये अच्छा  
है, वास्तव में हम उन्हें इस लिये  
अवसर दे रहे हैं कि उन के पाप<sup>[2]</sup>  
अधिक हो जायें, तथा उन्हीं के लिये  
अपमानकारी यातना है।

179. अल्लाह ऐसा नहीं है कि ईमान वालों  
को उसी (दशा) पर छोड़ दे, जिस  
पर तुम हो, जब तक बुरे को अच्छे  
से अलग न कर दे, और अल्लाह ऐसा  
(भी) नहीं है कि तुम्हें गैब (परोक्ष)  
से<sup>[3]</sup> सूचित कर दे, और परन्तु  
अल्लाह अपने रसूलों में से (परोक्ष पर  
अवगत करने के लिये) जिसे चाहे  
चुन लेता है। तथा यदि तुम ईमान  
लाओ, और अल्लाह से डरते रहो, तो  
तुम्हारे लिये बड़ा प्रतिफल है।

إِنَّ الَّذِينَ أَشْرَكُوا اللَّهُ بِالْأَيْمَانِ لَنْ يَفْعُلُوا اللَّهَ  
شَيْئاً وَلَمْ يَأْمُمْ عَدَابَ أَلِيمٍ<sup>①</sup>

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ أَمْلَى لَهُمْ حَيْزٌ  
لَا فِيهِمْ إِلَّا مُلْكٌ لَمْ يَرْبَدُ دُولَةٌ إِلَّا هُمْ  
عَذَابٌ مُهِمٌِّ<sup>②</sup>

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَنْهَا الرَّمُؤْمِنِينَ عَلَى مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ  
حَتَّىٰ يَبِرُّوا الْجَنِّيْثَ مِنَ الظَّلِيْمِ وَمَا كَانَ اللَّهُ  
لِيَقْطِلَ عَلَمَ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مِنْ  
رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ فَإِنَّمَا يَأْمُلُ اللَّهُ وَرَسُلُهُ وَإِنْ  
تُؤْمِنُوا وَتَسْقُوا فَلَكُمْ أَحْرَارُ عَظِيْمٌ<sup>③</sup>

1 अर्थात् उन्हें संसारिक सुख सुविधा देना। भावार्थ यह है कि इस संसार में अल्लाह, सत्योसत्य, न्याय तथा अत्याचार सब के लिये अवसर देता है। परन्तु इस से धोखा नहीं खाना चाहिये, यह देखना चाहिये कि परलोक की सफलता किस में है। सत्य ही स्थायी है तथा असत्य को ध्वस्त हो जाना है।

2 यह स्वभाविक नियम है कि पाप करने से पापाचारी में पाप करने की भावना अधिक हो जाती है।

3 अर्थात् तुम्हें बता दे कि कौन ईमान वाला और कौन दुविधावादी है।

180. वह लोग कदापि यह न समझें जो उस में कृपण (कंजूसी) करते हैं, जो अल्लाह ने उन को अपनी दया से प्रदान किया<sup>[1]</sup> है कि वह उन के लिये अच्छा है, बल्कि वह उन के लिये बुरा है, जिस में उन्होंने कृपण किया है। प्रलय के दिन उसे उन के गले का हार<sup>[2]</sup> बना दिया जायेगा। और आकाशों तथा धरती की मीरास (उत्तराधिकार) अल्लाह के<sup>[3]</sup> लिये है। तथा अल्लाह जो कुछ तुम करते हो उस से सूचित है।

181. अल्लाह ने उन की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन और हम धनी<sup>[4]</sup> हैं, उन्होंने जो कुछ कहा है हम उसे लिख लेंगे, और उन के नवियों की अवैध हत्या करने को भी, तथा कहेंगे कि दहन की यातना चखो।

182. यह तुम्हारे? कर्तृतों का दुष्परिणाम है, तथा वास्तव में अल्लाह बंदों के लिये तनिक भी अत्याचारी नहीं हैं।

183. जिन्होंने कहा: अल्लाह ने हम से वचन लिया है कि किसी रसूल का

1 अर्थात् धन धान्य की जुकात् नहीं देते।

२ सहीह बुखारी में अबू हुरैरह रजियस्त्राह अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम ने कहा: जिसे अल्लाह ने धन दिया है, और वह उस की ज़कात नहीं देता तो प्रलय के दिन उस का धन गंजा सर्प बना दिया जायेगा, जो उस के गले का हार बन जायेगा। और उसे अपने जबड़ों से पकड़ लेगा, तथा कहेगा कि मैं तुम्हारा कोष हूँ, मैं तुम्हारा धन हूँ। (सहीह बुखारी: 4565)

3 अर्थात् प्रलय के दिन वही अकेला सब का स्वामी होगा।

<sup>4</sup> यह बात यहूदियों ने कही थी। (देखिये: सूरह बकरह आयत: 254)

وَلَا يَحْسِنَ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا أَنْتُمْ  
اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرُ الرَّهْمَنِ هُوَ شَرِّهُ  
سَيِطُوقُونَ مَا يَعْلَمُوا يَوْمَ الْقِيمَةِ وَيَلْوِمُرَاثُ  
الثَّمُودَ وَالْأَزْرَقَ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرٌ

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ  
فَقِيرٌ وَّهُنَّ أَعْنَيْأَمْ سَمِعُوا مَا قَاتَلُوا وَمَا تَهْمُمُ  
الَّذِينَ يَعْبُرُونَ حَتَّىٰ وَنَقُولُ ذُوقُ عَذَابَ  
الْحَرَقَةِ

ذلِكَ بِمَا قَدَّمْتُ أَيْدِيهِمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ  
بِظَلَامٍ لِلْعَبْدِ<sup>٥</sup>

**آتَيْنَا إِلَيْهِ الْكِتَابَ وَنَحْنُ نَهْدِيهِ**

विश्वास न करें, जब तक हमारे समक्ष ऐसी बलि न दें जिसे अग्नि खा<sup>[1]</sup> जाये। (हे नबी!) आप कह दें कि मुझ से पूर्व बहुत से रसूल खुली निशानियाँ और वह चीज़ लाये जो तुम ने कहीं। तो तुम ने उन की हत्या क्यों कर दी, यदि तुम सच्चे हो तो?

184. फिर यदि इन्हों ने<sup>[2]</sup> आप को झुठला दिया तो आप से पहले भी बहुत से रसूल झुठलाये गये हैं, जो खुली निशानियाँ तथा (आकाशीय) ग्रंथ और प्रकाशक पुस्तकें लाये।<sup>[3]</sup>

185. प्रत्येक प्राणी को मौत का स्वाद चखना है। और तुम्हें तुम्हारे (कर्मों का) प्रलय के दिन भरपर प्रतिफल दिया जायेगा तो (उस दिन) जो व्यक्ति नरक से बचा लिया गया तथा स्वर्ग में प्रवेश पा गया<sup>[4]</sup>, तो वह सफल हो गया। तथा संसारिक जीवन धोखे की पूंजी के सिवा कुछ नहीं है।

186. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे धनों तथा प्राणों में तुम्हारी परीक्षा अवश्य ली जायेगी। और तुम उन से अवश्य बहुत सी दुखद बातें सुनोगे जो तुम

لِرَسُولِ حَتَّىٰ يَأْتِينَا بِمُرْبَّعٍ بَإِنْكَلَهُ الْتَّازٌ  
فَلْ قَدْ جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالْأَنْذِيرِ  
فُلْتَمِ فَلِمَ فَلَمْ تَلْتَمُوهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ @

فَإِنْ كَذَّبُوكُمْ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ  
جَاءُوكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَالثُّرُرِ وَالْكَلِيلِ الْمُسْبِرِ @

كُلُّ نَفْسٍ ذَآبِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُؤْفَقُونَ  
أُجُورُكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ رُحْزَ عَنِ  
الشَّارِدِ وَأَذْخَلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا  
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ @

لَتُبَتَّوْفُ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ  
وَلَتُشَمَّعَ مِنَ الظَّرِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَمَنْ  
كَبِّلَهُمْ وَمَنْ الظَّرِينَ أَشْرَكُوا أَذْهَى كَثِيرًا

1 अर्थात् आकाश से अग्नि आकर जला दे, जो उस के स्वीकार्य होने का लक्षण है।

2 अर्थात् यहूद आदि ने।

3 प्रकाशक जो सत्य को उजागर कर दे।

4 अर्थात् सत्य आस्था और सत्कर्मों के द्वारा इस्लाम के नियमों का पालन कर के।

से पूर्व पुस्तक दिये गये। तथा उन से जो मिश्रणवादी<sup>[1]</sup> हैं। तथा यदि तुम ने सहन किया, और (अल्लाह से) डरते रहे तो यह बड़े साहस की बात होगी।

187. तथा (हे नबी!) याद करो जब अल्लाह ने उन से दृढ़ वचन लिया था जो पुस्तक<sup>[2]</sup> दिये गये कि तुम अवश्य इसे लोगों के लिये उजागर करते रहोगे और उसे छुपावोगे नहीं। तो उन्होंने इस (वचन) को अपने पीछे डाल दिया (भंग कर दिया) और उस के बदले तनिक मूल्य खरीद<sup>[3]</sup> लिया। तो वह कितनी बुरी चीज़ खरीद रहे हैं!

188. (हे नबी!) जो<sup>[4]</sup> अपने कर्तृतों पर प्रसन्न हो रहे हैं और चाहते हैं कि उन कर्मों के लिये सराहे जायें जो उन्होंने नहीं किये। आप उन्हें कदापि न समझें कि यातना से बचे रहेंगे। तथा उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

1 مिश्रणवादी अर्थात् मूर्तियों के पूजारी, जो पूजा अर्चना तथा अल्लाह के विशेष गुणों में अन्य को उस का साझी बनाते हैं।

2 जो पुस्तक दिये गये, अर्थात्: यहूद और नसारा (ईसाई) जिन को तौरात तथा इंजील दी गयी।

3 अर्थात् तुच्छ संसारिक लाभ के लिये सत्य का सौदा करने लगे।

4 अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि कुछ द्विधावादी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में आप युध के लिये निकलते तो आप का साथ नहीं देते थे। और इस पर प्रसन्न होते थे और जब आप वापिस आते तो बहाने बनाते और शपथ लेते थे। और जो नहीं किया है उस की सराहना चाहते थे। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी -4567)

وَإِنْ تُصِيرُوهُ أَتَسْقُفُوا فَإِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ  
الْأَمُورِ ④

وَإِذَا أَخَذَ اللَّهُ مِنَّا مِنَّاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ  
لَشَيْئِنَةٍ لِلْمُنَاسِ وَلَا يَكُنُّ مُلْفَتَدُوْهُ  
وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَأَشْرَوْاهُمْ بِمَنَّا قَلِيلٌ  
فَمَنْ مَا يَشْرُونَ ④

لَا يَخْبَئُنَ الَّذِينَ يَقْرَأُونَ بِمَا أَتَوْا وَلَا يُجْبَوْنَ  
أَنْ يُخْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا يُحْسِنُونَ  
بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ④

189. तथा आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही का है। तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।
190. वस्तुतः आकाशों तथा धरती की रचना, और रात्रि तथा दिवस के एक के पश्चात् एक आते जाते रहने में मतिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ (लक्षण) <sup>[1]</sup> हैं।
191. जो खड़े, बैठे तथा सोये (प्रत्येक स्थिति में) अल्लाह की याद करते, तथा आकाशों और धरती की रचना में विचार करते रहते हैं। (कहते हैं:) हे हमारे पालनहार! तू ने इसे <sup>[2]</sup> व्यर्थ नहीं रचा है। हमें अग्रिन के दण्ड से बचा ले।
192. हे हमारे पालनहार! तू ने जिसे नरक में झोंक दिया, तो उसे अपमानित कर दिया, और अत्याचारियों का कोई सहायक न होगा।
193. हे हमारे पालनहार! हम ने एक <sup>[3]</sup> पुकारने वाले को ईमान के लिये पुकारते हुये सुना, कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, तो हम ईमान ले आये, हे हमारे पालनहार! हमारे पाप क्षमा कर दे, तथा हमारी बुराईयों को अन देखी

1 अर्थात् अल्लाह के राज्य, स्वामित्व तथा एकमात्र पूज्य होने के।

2 अर्थात् यह विचित्र रचना तथा व्यवस्था अकारण नहीं तथा आवश्यक है कि इस जीवन के पश्चात् भी कोई जीवन हो। जिस में इस जीवन के कर्मों के परिणाम सामने आयें।

3 अर्थात् अन्तिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَى  
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَآخِرِ الْحَيَاةِ  
آيَاتٍ وَالنَّهُ أَعْلَمُ بِالْآيَاتِ لَا يُؤْلِمُ الْأَلْبَابَ

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيمًا وَقُعُودًا وَعَلَى  
جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ  
وَالْأَرْضِ هُنَّا مَا خَلَقَتْ هَذَا يَاطَّالِكَ  
سُبْحَانَكَ فَقَنَاعَدَابَ النَّارِ

رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلُ النَّارَ فَقَدْ أَخْرَجْتَهُ  
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ

رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًّا يُنَادِي  
لِلْأَيْمَانِ أَنْ أُمُّوا بِرِّكَمْ قَامَكَاهُرَبَّنَا  
فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِرْ عَنْ أَسْيَائِنَا  
وَتَوَقَّنَّا مَعَ الْأَبْرَارِ

कर दे, तथा हमारी मौत पुनीतों  
(सदाचारियों) के साथ हो।

194. हे हमारे पालनहार! हम को, तू ने  
अपने रसूलों द्वारा जो वचन दिया  
है, हमें वह प्रदान कर, तथा प्रलय  
के दिन हमें अपमानित न कर,  
वास्तव में तू वचन विरोधी नहीं है।
195. तो उन के पालनहार ने उन की  
(प्रार्थना) सुन ली, (तथा कहा कि):  
निस्सदेह मैं किसी कार्यकर्ता के कार्य  
को व्यर्थ नहीं करता<sup>[1]</sup>, नर हो  
अथवा नारी। तो जिन्होंने हिजरत  
(प्रस्थान) की, तथा अपने घरों से  
निकाले गये, और मेरी राह में सताये  
गये और युद्ध किया, तथा मारे गये,  
तो हम अवश्य उन के दोषों को  
क्षमा कर देंगे। तथा उन्हें ऐसे स्वर्गों  
में प्रवेश देंगे जिन में नहरें वह रही  
हैं। यह अल्लाह के पास से उन का  
प्रतिफल होगा। और अल्लाह ही के  
पास अच्छा प्रतिफल है।
196. हे नबी! नगरों में काफिरों का  
(सुख सुविधा के साथ) फिरना आप  
को धोखे में न डाल दे।
197. यह तनिक लाभ<sup>[2]</sup> है, फिर उन का  
स्थान नरक है। और वह क्या ही  
बुरा आवास है!

رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْنَا عَلَى رُسُلِكَ وَلَا يُغْرِنَا يَوْمَ  
الْقِيَمَةِ إِنَّكَ لَا تَغْلِبُ الْمِيعَادَ

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُفْسِيُ عَمَلَ عَامِلٍ  
مِّنْكُمْ قَنْ ذَكِيرًا وَأُنْتِ بَعْضُكُمْ قَنْ بَعْضٍ  
فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرُجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا  
فِي سَيِّئِينَ وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لِأَكْفَارٍ كُفَّارٍ عَنْهُمْ  
سَيِّئَاتِهِمْ وَلَا دُخُلَّهُمْ جَنَّتٍ بَعْرُونِي مِنْ تَحْتِهَا  
الآنِهَرُ وَلَا يَوْمًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَلَا اللَّهُ عِنْدَهُ  
حُسْنُ التَّوَابِ

لَا يُغْرِيَنَّكَ تَقْلُبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْأَرْضِ

مَتَّلِعُ قَلْبِنَ لَهُمْ مَا وَهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ  
الْمِهَادُ

1 अर्थात् अल्लाह का यह नियम है कि वह सत्कर्म अकारथ नहीं करता, उस का  
प्रतिफल अवश्य देता है।

2 अर्थात् सामयिक संसारिक आनन्द है।

198. परन्तु जो अपने पालनहार से डरे तो उन के लिये ऐसे स्वर्ग हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। जिन में वह सदावासी होंगे। यह अल्लाह के पास से अतिथि सत्कार होगा। तथा जो अल्लाह के पास है पुनीतों के लिये उत्तम है।
199. और निःसंदेह अहले किताब (अर्थात् यहूद और ईसाई) में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं। और तुम्हारी ओर जो उतारा गया है उस पर भी अल्लाह से डरे रहते हैं। और उस की आयतों को थोड़ी थोड़ी कीमतों पर बेचते भी नहीं<sup>[1]</sup>। उन का बदला उन के रब के पास है। निःसंदेह अल्लाह जल्दी ही हिसाब लेने वाला है।
200. हे ईमान वालो! तुम धेर्य रखो<sup>[2]</sup>। और एक दूसरे को थामे रखो। और जिहाद के लिये तैयार रहो। और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम अपने उद्देश्य को पहुँचो।

لِكُنَ الَّذِينَ أَنْفَعُوهُمْ أَهُمْ جَنِّثٌ تَجْرِي مِنْ عَنْهُمْ الْأَنْهَارُ خَلِدُونَ فِيهَا لَرْلَاقُونْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِلْأَبْرَارِ ⑩

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزَلَ إِلَيْهِمْ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُمْ خَشِعِينَ بِاللَّهِ لَا يَشْرُكُونَ بِإِيمَانِهِمْ ثُمَّا قَلِيلًا وَلِكُلِّ أَنْمَمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ⑪

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا وَإِنَّفُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ٦٠

1 अर्थात् यह यहूदियों और ईसाईयों का दूसरा समुदाय है जो अल्लाह पर और उस की किताबों पर सहीह प्रकार से ईमान रखता था। और सत्य को स्वीकार करता था। तथा इस्लाम और रसूल तथा मुसलमानों के विपरीत सजिशें नहीं करता था। और चन्द टकों के कारण अल्लाह के आदेशों में हेर फेर नहीं करता था।

2 अर्थात् अल्लाह और उस के रसूल की फरमाँ बरदारी कर के और अपनी मनमानी छोड़ कर धेर्य करो। और यदि शत्रु से लड़ाई हो जाये तो उस में सामने आने वाली परेशानियों पर डटे रहना बहुत बड़ा धेर्य है। इसी प्रकार शत्रु के बारे में सदेव चोकन्ना रहना भी बहुत बड़े साहस का काम है। इसी लिये हीदीस में आया है कि अल्लाह के रास्ते में एक दिन मोरचे बन्द रहना इस दुनिया और उस की तमाम चीज़ों से उत्तम है। (सहीह बुखारी)